04 - केलिप्सो की धुन सा थिरकता वेस्टइंडीयन क्रिकेट

05 - कलाकार लक्ष्मण प्रसाद और दि साइलेंट रिदम्

06 - जिले में बढ़ रहा लम्पी वायरस का खतरा, पशु पालक एवं आमजन

07 - मलयालम के मोहनलाल का अलग ही जलवा

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 05 अक्टूबर, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 346, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

फोटो: गिरीश शर्मा

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

मैं चला
न भूमि ने दिशा दी
न आकाश ने संकेत
बस अन्तर्आत्मा ने कहा,
÷तू खोज में है÷।

न पथ स्थिर था
न गति और न लक्ष्य की निश्चित रेखा
फिर भी मैं चलता रहा
जैसे चलना मानो
जीवन की अनिवार्य शर्त हो

मैंने फूलों से पूछा-
क्या जीवन तुम्हारा सौंदर्य है?
मैंने पेड़ों से पूछा-
क्या जीवन तुम्हारी स्थिरता है?
मैंने नदियों से पूछा-
क्या जीवन तुम्हारी गति है?
मैंने रास्तों से पूछा-
क्या चलते रहना तुम्हारी नियति है?

और सबने मुस्कुराकर
मौन को ओढ़ लिया
और तब मैंने जाना
जीवन एक खोज है-
स्वयं की।

– जीवन एस. रजक

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का कड़ा रूख, छिंदवाड़ा मामले में लिया सख्त एक्शन

कोल्ड्रिफ कप सिरप पूरे प्रदेश में प्रतिबंधित

● छापामारी कर अमानक दवा जप्त करने के दिये निर्देश ● दोषियों को किसी कीमत पर बख्शा नहीं जायेगा ● मृतक के परिजन को 4-4 लाख रूपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा ● उपचाररत बच्चों का पूरा इलाज करायेगी राज्य सरकार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि छिंदवाड़ा जिले में कोल्ड्रिफ कप सिरप के कारण बच्चों की हुई मृत्यु अत्यंत दुखद है। कोल्ड्रिफ कप सिरप की जाँच रिपोर्ट आने पर मध्यप्रदेश में इस सिरप की बिक्री को पूर्णता प्रतिबंधित कर दिया गया है। प्रदेश में अभियान के तौर पर छापामारी कर कोल्ड्रिफ सिरप को जप्त किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि छिंदवाड़ा में इस सिरप के कारण जिन 11 बच्चों को मृत्यु हुई है, उनके परिजन को 4-4 लाख रूपये आर्थिक सहायता प्रदान की जायेगी। साथ ही उपचाररत बच्चों के इलाज का पूरा खर्च राज्य सरकार उठाएगी।

जाँच नमूने पाये गये अमान्य- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि छिंदवाड़ा की घटना संज्ञान में आने पर कोल्ड्रिफ सिरप के सैम्पल जाँच के लिए भेज गये थे। शनिवार की सुबह जाँच रिपोर्ट में पाया गया कि जाँच नमूने अमान्य पाये गये है। इस पर त्वरित कार्यवाही करते हुए

कोल्ड्रिफ सिरप के विक्रय को पूरे प्रदेश में प्रतिबंधित कर दिया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य स्तर पर भी इस मामले में संयुक्त जाँच टीम बनाई गई है। दोषियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जायेगा।

जाँच में पाई गई 48.6 प्रतिशत डाइएथिलीन ग्लाइकॉल की मात्रा- तमिलनाडु के औषधि नियंत्रक, द्वारा कोल्ड्रिफ सिरप को 'नॉट ऑफ़ स्टैण्डर्ड क्वालिटी (एनएसक्यू)' घोषित किया गया है। शासकीय औषधि विश्लेषक, औषधि परीक्षण प्रयोगशाला, चेन्नई के परीक्षण अनुसार इस सिरप में डाइएथिलीन ग्लाइकॉल की मात्रा पाई गई 48.6 प्रति. पाई गई है, जो एक जहरीला तत्व है और स्वास्थ्य के लिए गंभीर रूप से हानिकारक है। जिला छिंदवाड़ा से बच्चों की मृत्यु की घटनाओं की पृष्ठभूमि में इस औषधि की संदिग्ध भूमिका को ध्यान में रखते हुए प्रदेश में कठोर कदम उठाए गए हैं।

दोषियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि राज्य सरकार जनता के स्वास्थ्य और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। औषधियों की गुणवत्ता से कोई समझौता स्वीकार्य नहीं है। दोषियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा और उनके विरुद्ध कठोरतम कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा इस मामले में कठोर कार्यवाही के निर्देश दिए गए हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने स्पष्ट किया कि प्रदेशवासियों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने वालों को किसी भी स्थिति में नहीं छोड़ा जाएगा। आमजन को सुरक्षित, गुणवत्तापूर्ण और विश्वसनीय औषधियाँ उपलब्ध कराना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस दिशा में प्रदेश सरकार लगातार सतर्क और सजग रहते हुए दोषियों पर कठोरतम कार्रवाई कर रही है। उन्होंने कहा कि 26 से 28 सितम्बर 2025 तक जिला छिंदवाड़ा में औषधि निरीक्षकों की टीम द्वारा औषधि विक्रय संस्थानों एवं अस्पतालों का संयुक्त निरीक्षण किया गया।

इंदौर में बनी डिफॉस्ट सिरप भी बाजार से वापस बुलाई

छिंदवाड़ा में किडनी फेल होने से 11 बच्चों की मौत के मामले में कोल्ड्रिफ और नेक्स्ट्रो-डीएस कफ सिरप पर लगे बैन के अलावा, इंदौर में बनी डिफॉस्ट सिरप को बाजार से वापस बुलाने के निर्देश जारी कर दिए गए हैं।लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग ने इंदौर की आर्क फार्मास्यूटिकल्स कंपनी के खिलाफ कारण बताओ सूचना पत्र जारी कर डिफॉस्ट सिरप बैच नं. 11198 को बाजार से रिकॉल करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही, औषधि महानियंत्रक (भारत सरकार) और संबंधित राज्यों हिमाचल प्रदेश एवं तमिलनाडु के औषधि नियंत्रकों को पत्र लिखकर आवश्यक कार्रवाई करने को कहा गया है।

दो और केमिकल को लेकर अलर्ट- राज्य सरकार ने सभी औषधि निर्माताओं, निरीक्षकों, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारियों और मेडिकल कॉलेजों के डीन को एडवाइजरी जारी की है। इसमें क्लोरफेनिरामाइन मलेट और फिनाइलफ्रिन एचसीएल जैसे रसायनों के उपयोग को लेकर विशेष सावधानी बरतने के निर्देश दिए गए हैं।ये दोनों खांसी-जुकाम की दवाओं में आम तौर पर पाए जाने वाले सक्रिय तत्व हैं। यह संयोजन उपयोगी तो है, लेकिन छोटे बच्चों या बिना डॉक्टर की सलाह के इस्तेमाल पर खतरनाक साबित हो सकता है।

'जननायक' पद की चोरी हो रही, बिहार वाले सावधान !

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम सेतु योजना की लॉचिंग और आईटीआई दीक्षांत समारोह के मौके पर आयोजित युवा संवाद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली के विज्ञान भवन से राहुल गांधी और बिहार की लालू-राबड़ी सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर के जननायक पद की चोरी की कवायद की जा रही है। बिहार के लोगों को सावधान रहने की जरूरत है। पिछले दिनों वोटर अधिकार यात्रा से समय कांग्रेस नेताओं ने राहुल गांधी को तो पूर्णिया सांसद पप्पू यादव ने तेजस्वी यादव को जननायक बताया था। कांग्रेस के ट्विटर हैंडल पर राहुल गांधी को जननायक बताकर पोस्ट किया गया था। युवा संवाद को संबोधित करते हुए पीएम ने कहा कि कौशल दीक्षांत समारोह में बिहार को नई स्किल यूनिवर्सिटी मिली है।

नीतिश जी की सरकार ने इस यूनिवर्सिटी का नाम भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर जी के नाम पर रखा है। मैं बिहार के लोगों को कहूंगा चौकन्ने रहिए। यह जननायक पद कर्पूरी ठाकुर से ही शोभायमान है। बिहार की जनता ने उनकी कृति को देखते हुए यह सम्मान दिया। आजकल कुछ लोग जननायक की भी चोरी करने में लग गए हैं। इसलिए बिहार के लोगों से जागृत रहने का आग्रह करता हूं। हमारे कर्पूरी ठाकुर साहब को जनता के द्वारा दिया गया सम्मान कोई चोरी

पीएम मोदी ने राहुल गांधी और राजद पर साधा निशाना

न कर ले। पीएम ने कहा कि भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर जी ने अपना पूरा जीवन समाज की सेवा और शिक्षा विस्तार के लिए लगा दिया। उन्होंने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि समाज का सबसे कमजोर व्यक्ति भी आगे बढ़े। उनके नाम पर बनने वाले इसके लिए यूनिवर्सिटी इस सपने को आगे बढ़ने का माध्यम है। बिहार के हजारों युवा हमारे साथ जुड़े हैं। दो-ढाई दशक पहले बिहार में शिक्षा व्यवस्था कैसी

सरकार एक साथ जज, जूरी और जल्लाद नहीं बन सकती

सीजेआई गवई बोले-बुलडोजर ऐक्शन का मतलब देश का कानून तोड़ना

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीफ जस्टिस (सीजेआई) बीआर गवई ने कहा कि भारतीय न्याय व्यवस्था रूल ऑफ लॉ यानी (कानून के शासन) से चलती है, इसमें बुलडोजर ऐक्शन की जगह नहीं है।

सीजेआई मॉरीशस में आयोजित सर मॉरिस रॉल्ट मेमोरियल लेक्चर 2025 में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने हाल के फैसले में अदालत ने स्पष्ट किया था कि किसी आरोपी के खिलाफ बुलडोजर चलाना कानून की प्रक्रिया को तोड़ना है। सीजेआई ने कहा- सरकार एक साथ जज, जूरी और जल्लाद नहीं बन सकती। बुलडोजर शासन संविधान के अनुच्छेद 21 (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संरक्षण के अधिकार) का उल्लंघन है। लेक्चर के दौरान मॉरीशस के राष्ट्रपति धरमबीर गोखूल, प्रधानमंत्री नवीनचंद्र रामगुलाम और मुख्य न्यायाधीश रेहाना मंगली गुलबुल भी मौजूद थे। सीजेआई ने तीन तलाक खत्म करने, व्यभिचार कानून को निरस्त करने, चुनावी बॉन्ड स्कीम और निजता को मौलिक अधिकार मानने जैसे फैसलों का भी जिक्र किया। गवई ने कहा कि इन सभी फैसलों ने दिखाया कि अदालत ने रूल ऑफ लॉ को एक ठोस सिद्धांत बनाया है, जिससे मनमाने और अन्यायपूर्ण कानून खत्म किए गए।

भारत में रूल ऑफ लॉ नैतिक और सामाजिक ढांचा

सीजेआई गवई ने कहा कि भारत में रूल ऑफ लॉ केवल नियमों का सेट नहीं है, बल्कि यह नैतिक और सामाजिक ढांचा है, जो समानता, गरिमा और सुशासन सुनिश्चित करता है। उन्होंने महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अंबेडकर के योगदान का हवाला देते हुए कहा कि उनका दृष्टिकोण बताता है कि लोकतंत्र में कानून का राज ही समाज को न्याय और जवाबदेही की ओर ले जाता है। इससे पहले सीजेआई गवई ने 24 सितंबर को कहा था कि बुलडोजर एक्शन के खिलाफ आदेश देने पर उन्हें बेहद संतुष्टि मिली थी। इस फैसले में मानवीय पहलू भी जुड़ा था। किसी परिवार को सिर्फ इसलिए परेशान नहीं किया सकता कि उस परिवार का एक सदस्य अपराधी है। गवई ने कहा, बेंच में मेरे साथ जस्टिस केवी विश्वनाथन भी शामिल थे। हालांकि, ज्यादातर श्रेय मुझे दिया गया है, लेकिन मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इस फैसले को लिखने का क्रेडिट जस्टिस विश्वनाथन को भी जाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने नवंबर 2024 में बुलडोजर ऐक्शन पर फैसला सुनाया था। कोर्ट ने कहा था कि अफसर जज नहीं बन सकते। वे तय न करें कि दोषी कौन है। बेंच ने ये भी कहा था कि 15 दिन के नोटिस के बगैर निर्माण गिराया तो अफसर को दोबारा बनाना पड़ेगा।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 05 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किए माँ कामाख्या देवी के दर्शन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को गुवाहाटी प्रवास के दौरान माँ कामाख्या देवी मंदिर में दर्शन कर राष्ट्रवासियों के जीवन में सुख-समृद्धि और मध्यप्रदेश एवं असम की निरंतर उन्नति के लिए प्रार्थना की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सीमा यादव ने भी मां कामाख्या देवी मंदिर के दर्शन किए। गुवाहाटी के माँ कामाख्या मंदिर परिसर में मंदिर समिति के पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव का स्वागत भी किया।

भोपाल हाट में खादी उत्सव पर कश्मीर के ड्राई-फ्रूट

गोबर से बनी दिवाली किट, जामदानी और बगलू ; लखनऊ की चिकन साड़ियां भी

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय खादी उत्सव 2025 भोपाल हाट, डीबी मॉल के पास 27 सितंबर से शुरू हो चुका है। ये इवेंट 10 अक्टूबर तक चलेगा। यहां अलग- अलग राज्यों से कारीगर अपना प्रोडक्ट लेकर पंहुचे हैं। कोई यहां गोबर से बने लक्ष्मी-गणेश, गोबर से बनी स्पेशल दिवाली किट बेच रहा है। तो वहीं किसी ने तरह- तरह की साडियां, सूट, दुपट्टे का स्टॉल लगाया है। यहां आपको कश्मीर के स्पेशल ड्राई-फ्रूट भी देखने को मिलेंगे। हाथों-हाथ मिट्टी के बरतनों से लेकर यहां बच्चों के खेलने का सामान और महिलाओं की नेच्यूरल ज्वेलरी भी मिल रही है। दुकानों पर लगी बंगाली से लेकर लखनऊ की चिकन साड़ी, जामदानी सूट और बनारसी, राजस्थानी साडियां खूब बिक रही हैं। इस बार का थीम वोकल फॉर लोकल है, जिसका नारा है- हर घर लोकल, घर-घर लोकल। उत्सव में देशभर से आए कारीगर और छोटे व्यापारी अपने उत्पाद लेकर पहुंचे हैं, जिससे भोपाल हाट इन दिनों

कला और संस्कृति का केंद्र बना हुआ है। इस इवेंट से खादी और छोटे कारीगरों को बढ़ावा मिल रहा है। हर साल यह उत्सव भोपाल हाट में होता है। इसमें भाग लेने वाले शिल्पकार अपनी कलाकृतियों को सीधा ग्राहकों तक पहुंचाते हैं।

950 में मिलेगी गोबर से बनी दिवाली स्पेशल किट

भोपाल हाट में लगी गोबर मैजिक नाम की दुकान कस्टमर को अट्रैक्ट कर रही है। गोबर से बने आइटम स्टॉल पर लगे हैं। दुकान लगाने आए जितेंद्र बताते हैं कि, मैं पिछले 16 सालों से गोबर के प्रोडक्ट्स पर काम कर रहा हूं और कई सालों से स्टॉल लगा रहा हूं। यहां मैने 75 तरह के आइटम लगाए हैं। ये सभी गौमाता के गोबर से बने हैं। हमारे पास 950 रुपए की दिवाली स्पेशल किट भी है। इसके अलावा गोबर के दिए, लक्ष्मी-गणेश, शुभ-लाभ, बंधन बार जैसे कई तरह के प्रोडक्ट स्टॉल पर हैं।

भोपाल हाट में कश्मीरी ड्राइ फ्रूट्स की स्टॉल भी लगी है। दुकानदार ने बताया कि, पहली बार भोपाल के खादी उत्सव में स्टॉल लगाने आया हूं। हमारे पास कई तरह के कश्मीरी ड्राई फ्रूट एवी-लेबल है। हमारे यहां सबसे ज्यादा फेमस कश्मीरी लहसुन है, जिसे पहाड़ी लहसुन भी कहा जाता है। ये लहसुन कोलेस्ट्रॉल, हार्ट, डायबिटीज, शुगर जैसी बीमारियों से लड़ने में मदद करता है।

बॉम्बे हाईकोर्ट ने निचली अदालत के दो जज किए बर्खास्त

एक रिश्वत लेने का दोषी

मुंबई (एजेंसी)। बॉम्बे हाईकोर्ट ने शुक्रवार को निचली अदालत के दो जजों को कदाचार और न्यायिक अधिकारियों के अनुरूप आचरण न करने के आरोप में बर्खास्त कर दिया है। सतारा के एडीशनल सेशन जज धनंजय निकम और पालघर के सिविल जज सीनियर डिवीजन इरफान शेख की बर्खास्तगी का फैसला अनुशासन समिति की

जांच के बाद लिया गया। धनंजय निकम पर रिश्वतखोरी का आरोप है, जबकि इरफान शेख पाक्सो एक्ट के तहत मामलों की सुनवाई के दौरान भ्रष्टाचार करने और जांच के दौरान जब्त ड्रग्स के इस्तेमाल के लिए दोषी पाए गए। शेख के खिलाफ हाईकोर्ट में दायर एक याचिका अभी भी लंबित है।

छोटे शहरों-ग्रामीण इलाकों में बैंक बढ़ा रहे एटीएम

डिजिटल पेमेंट और बढ़ती लागत के चलते रणनीति बदली

मुंबई (एजेंसी)। डिजिटल भुगतान के बढ़ते इस्तेमाल और महानगरों व बड़े शहरों में एटीएम चलाने की बढ़ती लागत के चलते बैंक रणनीति बदल रहे हैं। शहरी क्षेत्रों में एटीएम का उपयोग घट रहा है और मेंटेनेंस महंगा हो गया है। ऐसे में बैंक छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों में एटीएम पर

जोर दे रहे हैं। बैंक अधिकारियों का कहना है कि शहरी एटीएम से आय लागत के मुकाबले कम है। 6-8 वर्ग फीट के एटीएम स्पेस का किराया 40,000 रुपए तक पहुंच जाता है। मुंबई जैसे शहर में मासिक देखरेख का खर्च 1 लाख रुपए तक आता है। इसके अलावा, मुफ्त निकासी की सीमा, इंटरचेंज फीस पर पाबंदी ने भी मार्जिन घटा दिया है। फिलहाल, 1 लाख लोगों पर 15 एटीएम हैं। इनमें 80 फीसदी शहरी क्षेत्रों में हैं, जबकि 67 फीसदी आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती है।

पूछताछ नहीं, सिर्फ मुकदमे का ही करना होगा सामना

- नीरव मोदी केस में भारत ने ब्रिटेन सरकार को दी गारंटी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भगोड़े हीरा कारोबारी नीरव मोदी के भारत प्रत्यर्पण को लेकर केंद्रीय एजेंसियां लगातार कोशिश में जुटी हैं। यही वजह है कि भारत सरकार ने ब्रिटेन की सरकार को एक पत्र के जरिए कुछ आश्वासन दिए हैं। उन्होंने यूके के अधिकारियों को भरोसा दिया है कि प्रत्यर्पण केस में नीरव मोदी को सिर्फ मुकदमे का सामना करना होगा। उस पर कोई नए आरोप नहीं लगाए जाएंगे। उससे कोई नई पूछताछ नहीं की जाएगी। केंद्र सरकार ने ये गारंटी ऐसे समय में दी है जब लंदन की एक अदालत 23 नवंबर को नीरव मोदी की एक याचिका पर सुनवाई करेगी। नीरव मोदी इस याचिका के जरिए चाहता है कि उसके प्रत्यर्पण मामले की सुनवाई फिर से शुरू हो। उसने यह दलील दी है कि अगर उसे भारत वापस भेजा गया, तो उसे पूछताछ का सामना करना पड़ सकता है। नीरव मोदी ने

वेस्टमिंस्टर कोर्ट में कहा कि भारतीय एजेंसियों की ओर से की जाने वाली पूछताछ उसके लिए यातना जैसी हो सकती है। इसी के बाद भारतीय अधिकारियों की ओर से यूके के अधिकारियों को इस मामले में अहम आश्वासन दिए गए हैं। अधिकारियों ने बताया कि भारतीय एजेंसियां नीरव मोदी के इस दावे का जवाब देने की तैयारी कर रही। वे अदालत को यह भरोसा दिलाएंगी कि उसे सिर्फ मुकदमे का सामना करना होगा। उससे कोई नई पूछताछ नहीं की जाएगी। अधिकारी ने बताया कि हमने इस मामले में पहले ही चार्जशीट दाखिल कर दी है। अभी उससे पूछताछ की जरूरत नहीं है। अधिकारी ने यह भी बताया कि हमारी जांच लगभग पूरी हो चुकी है।

निवेश के सर्वाधिक अनुकूल है मध्य प्रदेश

मुख्यमंत्री आज असम में निवेशकों से करेंगे वन टू वन चर्चा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, रविवार 5 अक्टूबर को असम के गुवाहाटी में पूर्वोत्तर राज्यों के निवेशकों सहित भूटान के प्रतिनिधियों से वन टू वन चर्चा करेंगे। सेशन को रॉयल भूटान काउन्सलेट के काउंसिल जनरल श्री जिग्मे थिनायल नामग्याल भी संबोधित करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव मध्यप्रदेश के निवेश के प्रमुख सेक्टर और उद्योग-अनुकूल नीतियों की जानकारी देंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की संकल्पबद्धता और राज्य की मजबूत नीतियां निवेशकों को भरोसा देती हैं कि उनके व्यवसाय के लिए प्रदेश में हर तरह के संसाधन और अवसर उपलब्ध हैं। यह अवसर पूर्वोत्तर और मध्यप्रदेश के उद्योगों के लिए साझी संभावनाओं का नया मार्ग खोलेगा।

मध्यप्रदेश की केन्द्रीय भौगोलिक स्थिति, विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा और बाजार तक आसान पहुंच इसे निवेशकों के लिए सर्वाधिक अनुकूल और एक अनूठा केंद्र बनाती है। मध्यप्रदेश ने उद्योग-अनुकूल नीतियां और क्लस्टर आधारित विकास मॉडल तैयार किए हैं, जिससे निवेशक अपनी नए उद्योग की योजना को तेजी से क्रियान्वित कर सकते हैं। राज्य के एग्रो और फूड प्रोसेसिंग सेक्टर में निवेशकों को कृषि उत्पादन और प्रोसेसिंग क्षमताओं का लाभ मिलता है। टेक्सटाइल्स और अपैरल सेक्टर राज्य की परंपरागत और आधुनिक क्षमता का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिससे निर्यात और रोजगार दोनों में वृद्धि संभव होती है।

भारत- ब्राजील अब आ रहे और ज्यादा करीब

रणनीतिक साझेदारी पर फोकस, डोनाल्ड ट्रंप के लिए बड़ा संदेश !

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ के बाद से ब्रिक्स देशों के बीच करीबी देखने को मिल रही है। इस क्रम में भारत और ब्राजील के बीच भी करीबी देखने को मिल रही है। इस क्रम

में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने अपने ब्राजीलियाई समकक्ष सेल्सो लुइस नून्स अमोरिम से मुलाकात की। जिस तरह से भारत और ब्राजील के रिश्तों में गर्मजोशी देखने को मिल रही है, इससे ट्रंप के लिए बड़ा संदेश है। भारत और ब्राजील ने शुक्रवार को रक्षा एवं सुरक्षा, ऊर्जा, दुर्लभ मृदा और महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में साझेदारी को आगे बढ़ाने पर विचार-विमर्श किया। अमोरिम के साथ ब्राजील के वरिष्ठ अधिकारियों और सलाहकारों का एक प्रतिनिधिमंडल भी था। एनएसए और अमोरिम ने स्वास्थ्य एवं फार्मास्यूटिकल्स के क्षेत्र में सहयोग के साथ-साथ नवंबर में ब्राजील द्वारा आयोजित ब्रिक्स, आईबीएसए और कॉप 30 जैसे बहुपक्षीय मंचों पर भी चर्चा की।

बरेली में 'बवाल', मुश्किल में तौकीर रजा के सहयोगी

- पार्टी के महासचिव के 'रजा पैलेस' पर चला बुलडोजर
- योगी सरकार का ऐक्शन, शरण देने वाले का घर भी सील

बरेली (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में पिछले शुक्रवार 26 सितंबर को हुए बवाल के बाद प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए अवैध निर्माणों पर बुलडोजर चलवा दिया। शनिवार को शहर में कई स्थानों पर कार्रवाई की गई।

इस दौरान मौलाना तौकीर रजा की पार्टी इत्तेहाद मिल्लत कार्उंसिल के महासचिव और प्रवक्ता नफीस अहमद खां के बारात घर रजा पैलेस को भी ध्वस्त कर दिया गया। बरेली हिंसा के बाद से लगातार पुलिस की कार्रवाई जारी है। इस क्रम में हिंसा भड़काने के आरोप में आईएमसी नेता मौलाना तौकीर रजा को गिरफ्तार किया गया है। साथ ही, उनके सहयोगियों पर भी ऐक्शन शुरू हो गया है। बरेली में इसी क्रम में शनिवार को बारातघर की इमारत को अवैध निर्माण मानते हुए नगर निगम ने भारी पुलिस बल की मौजूदगी में बुलडोजर चलवाया।

कार्रवाई के दौरान इलाके में लोगों की भीड़ जमा हो गई। पुलिस ने किसी भी तरह की गड़बड़ी न होने देने के लिए पूरे इलाके को छावनी में बदल दिया। भारी सुरक्षा इंतजाम के बीच नगर निगम की ओर से कार्रवाई को पूरा कराया गया।

अमित शाह ने जवानों के लिए मां दंतेश्वरी से की प्रार्थना

कहा-31 मार्च तक देश को नक्सलवाद से कर देंगे मुक्त

जगदलपुर (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने शनिवार को छत्तीसगढ़ के बस्तर दौरे पर पहुंचे। उन्होंने यहां सबसे पहले जगदलपुर शहर में स्थित मां दंतेश्वरी मंदिर में पूजा-अर्चना की। अमित शाह के साथ मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष किरण सिंह देव और राज्य के गृहमंत्री विजय शर्मा भी मौजूद थे। मां दंतेश्वरी की पूजा करने के बाद अमित शाह ने साफ शब्दों में संदेश दिया कि मां दंतेश्वरी की जमीन को नक्सलवाद से मुक्त कर देंगे। अमित

शाह राज्य के दो दिवसीय दौरे पर शुक्रवार रात रायपुर पहुंचे थे। अमित शाह ने मां दंतेश्वरी की पूजा अर्चना करने के बाद विश्व प्रसिद्ध बस्तर दशहरा उत्सव के तहत आयोजित होने वाले पारंपरिक आयोजन मुरिया दरबार में शामिल हुए। मुरिया दरबार में अमित शाह ने पुजारियों और आदिवासी समुदाय के नेताओं से बातचीत की। लगभग 75 दिनों तक आयोजित विश्व प्रसिद्ध बस्तर दशहरा में अश्विन शुक्ल 12 को मुरिया दरबार का आयोजन किया जाता है, जिसमें जनप्रतिनिधियों सहित क्षेत्र के पुजारी, मांझी-चालकी और गणमान्य नागरिक शामिल होते हैं।

भारत और रूस की जोड़ी फिर करेगी बड़ा धमाका

साथ मिलकर बना रहे ब्रह्मोस मिसाइल का नया वैरिएंट

बीजिंग/इस्लामाबाद (एजेंसी)। मिसाइलों की दुनिया में भारत और रूस मिलकर नया धमाका करने की तैयारी में हैं। दोनों देश मिलकर अब माच 4.5 स्पीड वाली ब्रह्मोस मिसाइल डेवलप कर रहे हैं, जो न सिर्फ मौजूदा ब्रह्मोस मिसाइल से काफी ज्यादा तेज है, बल्कि चीन की डीएफ-26 हाइपरसोनिक मिसाइल को सीधी चुनौती देगी। यह नया वैरिएंट ब्रहमोस एयरोस्पेस के तहत तैयार किया जा रहा है, जो भारत की डीआरडीओ और रूस के एनपीओ मशीनोस्ट्रिजियन का

ज्वाइंट वेंचर है। भारत के पास जो मौजूदा ब्रह्मोस है, उसकी स्पीड माच 3 है, जबकि जिस नये ब्रह्मोस को डेवलप किया जा रहा है, उसकी स्पीड माच 4.5 यानी लगभग 5,500 किमी प्रति घंटे से ज्यादा की स्पीड है। यह अपग्रेड भारत की स्ट्राइक कैपेबिलिटी को नेक्स्ट लेवल पर ले जाएगा। भारत इसे भविष्य के खतरों को देखते हुए तैयार कर रहा है, क्योंकि चीन एडवांस एयर डिफेंस सिस्टम तैयार कर रहा है। हो सकता है आगे जाकर चीन ऐसा एयर डिफेंस तैयार कर ले।

एस-400 की और नई खेप खरीदने की तैयारी में भारत

एस-500 खरीदने पर भी विचार करेगा; दिसंबर में पुतिन के भारत दौरे के समय डील संभव

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत रूस से कुछ और एस-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम खरीद सकता है। ऐसे पांच सिस्टम की डील पहले ही हुई थी, जिनमें से 3 भारत को मिल चुके हैं। नई डील इनके अलावा होगी। न्यूज एजेंसी के सोर्स के मुताबिक, दिसंबर में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के भारत दौरे के समय डील पर बातचीत हो सकती है। यह वही डिफेंस सिस्टम है, जिसने ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान की ओर से किए गए ड्रोन और मिसाइल हमलों को हवा में ही मारकर नाकाम किया था। भारत ने अक्टूबर 2018 में रूस के साथ 5 अरब डॉलर का समझौता किया था। उस समय अमेरिका ने चेतावनी दी थी कि इस सौदे को आगे बढ़ाने पर वह कानून के तहत भारत पर पाबंदी लगा सकता है। भारत एस-500 मिसाइल सिस्टम खरीदने पर भी विचार कर रहा है।

महाराष्ट्र में 7 साल की बच्ची का रेप-मर्डर, आरोपी गिरफ्तार

- दो साल पहले भी बच्ची का रेप-मर्डर किया था

भिवंडी (एजेंसी)। महाराष्ट्र के ठाणे जिले के भिवंडी में 33 साल के एक पावरलूम मजदूर ने पड़ोस में रहने वाली सात साल की एक बच्ची के साथ रेप किया और गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी। फिर बच्ची के शव को एक बोरे में बंद करके भाग गया। घटना 1 अक्टूबर की है। पुलिस ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। आरोपी ने इसी पैटर्न पर साल 2023 में रेप-मर्डर की एक और घटना को अंजाम दिया था। तब उसने भिवंडी में ही छह साल की बच्ची के साथ हैवानियत की और फिर उसकी जान ले ली थी। उस मामले में वह जेल में था।

ट्रम्प की धमकी के बाद झुक गया हमास

- सीजफायर पर हो गया राजी, गाजा पर कब्जा छोड़ेगा
- बंधक रिहा होंगे, इजराइल तुरंत हमला रोकने को तैयार

वॉशिंगटन डीसी (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प की धमकी के 6 घंटे बाद हमास गाजा में सीजफायर को तैयार हो गया है। हमास ने शुक्रवार रात ऐलान किया कि वह ट्रम्प के प्लान में बताए गए फॉर्मूले के मुताबिक सभी जिंदा और मुर्दा बंदियों को रिहा करने को तैयार है। साथ ही गाजा का प्रशासन छोड़ने को भी तैयार है। हमास ने यह भी कहा कि राष्ट्रपति ट्रम्प की इस हफ्ते पेश की गई 20 पॉइंट की पीस डील के कुछ हिस्सों पर बातचीत जरूरी है। अल जजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक हमास की तरफ से जो जवाब आया है, उसमें हथियार छोड़ने का जिक्र नहीं किया

गया है। हमास के ऐलान के बाद ट्रम्प ने इजराइल को तुरंत गाजा में हमले करना बंद करने को कहा है। वहीं, इजराइल ने कहा कि वह ट्रम्प के गाजा प्लान पर काम करने के लिए तैयार है। प्रधानमंत्री नेतन्याहू के ऑफिस ने बयान जारी कर रहा कि इजराइल ट्रम्प के प्लान के पहले चरण को लागू करने के लिए तैयार है। इसके लिए वे ट्रम्प और उनकी टीम के साथ मिलकर काम करेंगे ताकि जंग खत्म हो। इसके साथ ही इजराइल गाजा में हमला रोकने को तैयार हो गया है। सरकार ने सेना को गाजा पर कब्जे की कार्रवाई को रोकने का आदेश दिया है। इसमें कहा गया है कि सिर्फ जरूरत पड़ने पर ही कार्रवाई की जाए।

शताब्दी वर्ष पर इंदौर में आरएसएस का सबसे बड़ा पथ संचलन आज निकलेगा

इंदौर। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर कल रविवार 5 अक्टूबर को विशेष पथ संचलन का आयोजन किया जा रहा है। इंदौर में 34 स्थानों से निकलने वाले इस संचलन में 2 लाख से अधिक स्वयंसेवक शामिल होंगे। कुछ स्थानों से सुबह 8 से साढ़े 8 बजे और अन्य स्थानों से दोपहर 4 बजे बाद संचलन प्रारंभ होगा। संघ के शताब्दी वर्ष को लेकर स्वयंसेवकों और नागरिकों में गजब का उत्साह है। गणवेश की मांग इतनी अधिक रही कि आपूर्ति का टोटा पड़ गया। अब तक डेढ़ लाख से अधिक गणवेश इंदौर में वितरित हो चुकी है और लगातार मांग बढ़ रही है। संघ कार्यकर्ताओं ने पिछले दिनों घर-घर जाकर लोगों को आमंत्रित किया है। अनुशासित स्वयंसेवक कदमताल करते हुए इस ऐतिहासिक पथ संचलन का हिस्सा बनेंगे। इस आयोजन में उद्योगपति, डॉक्टर, वकील, आईटी विशेषज्ञ, इंजीनियर सहित विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोग भी शामिल होंगे। महिलाओं की भी बड़ी संख्या में भागीदारी रहेगी।

संचलन मार्ग भगवा ध्वजों से सजाया जा रहा है। पुष्पवर्षा, आरती और स्वागत मंचों से स्वयंसेवकों का अभिनंदन किया जाएगा। यातायात व्यवस्था सुचारु रखने के लिए पुलिस प्रशासन और संघ ने विशेष योजना बनाई है। अखिल भारतीय सह सर कार्यवाह अरुण कुमार कनाडिया क्षेत्र के पथ संचलन में मौजूद रहेंगे। आज शाम 5 बजे डेली कॉलेज के धीरूभाई अंबानी सभागृह में संगीत संध्या होगी, जिसमें राष्ट्रभक्ति गीतों की प्रस्तुति दी जाएगी। आयोजन के संयोजक सिद्धार्थ सिंह और प्राचार्या डॉ. गुनमित बिंद्रा ने आमजन को सहपरिवार आमंत्रित किया है।

इंदौर-खंडवा रेल लाइन के गेज कन्वर्जन में 2.5 लाख पेड़ों की कटाई का प्रस्ताव

इंदौर। शहर और आसपास के जंगल एक बार फिर विकास की बलि चढ़ने वाले हैं। इंदौर-खंडवा रेल लाइन गेज कन्वर्जन परियोजना के तहत अगले तीन सालों में 2.5 लाख पेड़ों की कटाई की तैयारी है। इस प्रस्ताव पर आज शुक्रवार को भोपाल में वन और रेलवे अधिकारियों की बैठक में चर्चा होगी। यह योजना सीधे महू, चोरल और बल जैसे वन्यजीव-समृद्ध क्षेत्रों को प्रभावित करेगी, जहां दर्जनों तेंदुए, बाघ और अन्य वन्यजीव रहते हैं। आईआईटी की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2000 से अब तक इंदौर के आसपास 4 लाख से अधिक पेड़ हाईवे, सुपर कॉरिडोर, बीआरटीएस और रेलवे प्रोजेक्ट्स की बलि चढ़ चुके हैं। इनकी क्षतिपूर्ति इंदौर में जमीन की कमी के कारण शाजापुर और गुना जैसे जिलों में पौधे लगाकर की गई। हाल ही में लालबाग के पास 300 साल पुराने पीपल का पेड़ काटा गया था। रिपोर्ट बताती है कि इंदौर-खंडवा हाईवे के लिए 1.25 लाख, इंदौर-मानपुर घाट के लिए 50 हजार, नर्मदा-शिप्रा और ट्रांसमिशन लाइन के लिए 2 लाख, इंदौर-बैतूल हाईवे पर 9 हजार और बीआरटीएस के लिए 3 हजार पेड़ काटे गए।

चोरल के जंगल खतरे में- चोरल के जंगल इंदौर को साफ हवा देते हैं। लेकिन अब यहां भी दो लाख पेड़ों की कटाई का प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजा जा चुका है। मंजूरी मिलने के बाद इसे केंद्र के पास भेजा जाएगा। चिंता की बात यह है कि पेड़ इंदौर के कटेंगे और क्षतिपूर्ति अन्य जिलों में होगी। देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर को विकास की कीमत हरियाली गंवाकर चुकानी पड़ रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर यही हाल रहा तो शहर की पर्यावरणीय संतुलन और साफ हवा दोनों पर गंभीर संकट आ सकता है।

नो एंट्री तोड़ने वाले 18 वाहन पकड़े

इंदौर। शहर में सुचारू और सुरक्षित यातायात व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस लगातार सख्त कार्रवाई कर रही है। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर नो एंट्री नियम का उल्लंघन करने वाले भारी वाहनों पर विशेष निगरानी रखी जा रही है। इसी कड़ी में 3 अक्टूबर की सुबह से 4 अक्टूबर की सुबह तक कार्रवाई करते हुए इंदौर पुलिस ने नो एंट्री में घुसे 18 भारी वाहनों को पकड़कर चालानी कार्रवाई की। पुलिस ने वाहन चालकों को चेतावनी देते हुए स्पष्ट निर्देश दिए कि प्रशासन द्वारा निर्धारित समय और नियमों का पालन अनिवार्य है। यातायात विभाग का कहना है कि शहर की भीड़भाड़ और दुर्घटनाओं को रोकने के लिए आगे भी इसी प्रकार की सख्ती जारी रहेगी।

इनामी सिकलीगर को खंडवा में पकड़ा

इंदौर। पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए 10 हजार के इनामी सिकलीगर को गिरफ्तार किया। उसकी तलाश इंदौर पुलिस को भी लंबे समय से थी। पकड़े गए आरोपी पर कई आपराधिक मामले दर्ज बताए जा रहे हैं। जानकारी के अनुसार, आरोपी पहले इंदौर में लेथ मशीन पर हथियारों के पुर्जे बनवाता था। पुलिस की बढ़ती सख्ती के बाद उसने ठिकाना बदल लिया और अब देवास जिले के खातेगांव में पुर्जे बनवाने लगा था। पुलिस ने जांच में उस लेथ मशीन मालिक को भी पकड़ लिया है, जो आरोपी की मदद कर रहा था। पुलिस का कहना है कि आरोपी से पूछताछ में और भी खुलासे हो सकते हैं। उसे रिमांड पर लेकर नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की तलाश की जाएगी। इस गिरफ्तारी को पुलिस ने बड़ी सफलता बताया है।

अनवर कादरी की पार्षदी पर संकट 9 अक्टूबर को बड़ा फैसला होगा

नगर निगम परिषद की बैठक में सदस्यता समाप्ति का प्रस्ताव

इंदौर। नगर निगम की राजनीति 9 अक्टूबर को बड़ा मोड़ लेने जा रही है। कांग्रेस पार्षद और लव जिहाद फंडिंग केस में जेल में बंद आरोपी अनवर कादरी उर्फ डकैत की सदस्यता समाप्त करने का प्रस्ताव परिषद में पेश किया जाएगा। महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने साफ कहा है कि कादरी का रिकॉर्ड शुरू से विवादों में रहा है और ऐसे व्यक्ति का निगम में बने रहना शहर की छवि पर धब्बा है। महापौर ने बताया कि कादरी के खिलाफ दर्जनों मामले दर्ज हैं। वे कई बार फरार रहे, गवाहों को प्रभावित किया और शहर की शांति भंग करने वाले कामों में शामिल रहे। उन पर गुंडागर्दी, देशविरोधी नारेबाजी, लव जिहाद को बढ़ावा और रासुका जैसे गंभीर आरोप पहले से हैं। कादरी की सदस्यता खत्म करने के लिए एमआईसी से प्रस्ताव पहले ही पारित हो चुका है। अब यह प्रस्ताव 9 अक्टूबर को परिषद में रखा जाएगा। महापौर ने दावा किया कि परिषद में दो-तिहाई बहुमत भाजपा के पास है, इसलिए प्रस्ताव पारित होना तय है। उन्होंने कहा कि निष्पक्षता के लिए कादरी को अपना पक्ष रखने का अवसर मिलेगा, लेकिन जेल में रहना और फरार रहना ही साबित करता है कि वे नगर निगम का हिस्सा बने रहने के योग्य नहीं हैं।

गोवा जाने वाली फ्लाइट का समय बदलेगा

इंदौर। एयर इंडिया एक्सप्रेस की इंदौर से प्रतिदिन गोवा जाने वाली उड़ान का समय 26 अक्टूबर से बदल जाएगा। अब यह उड़ान इंदौर से गोवा जाकर फिर इंदौर आएगी। पहले गोवा से इंदौर आकर फिर गोवा जाती थी। अब इंदौर से यह उड़ान मौजूदा समय से दो घंटे पहले गोवा के लिए रवाना होगी। अभी तक यह उड़ान उत्तर गोवा के मनोहर पर्रिकर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर यात्रियों को ले जाती थी, लेकिन 26 अक्टूबर से यह मध्य गोवा के डाबोलिम एयरपोर्ट जाएगी। वर्तमान में इंडिगो की एक नियमित और एक साप्ताहिक उड़ान डाबोलिम एयरपोर्ट जाती है। 26 अक्टूबर से यह इंदौर से सुबह 10.50 बजे रवाना होगी और दोपहर 12.35 बजे गोवा पहुंचेगी। गोवा से दोपहर 1.15 बजे रवाना होकर दोपहर 2.55 बजे इंदौर पहुंचेगी। गोवा से सुबह 10.15 बजे रवाना होकर 11.50 बजे इंदौर आती है। इंदौर से दोपहर 12.20 बजे रवाना होकर 1.55 बजे गोवा पहुंचती है।

24 घंटे में साढ़े 4 इंच से ज्यादा बारिश

रातभर रूक-रूककर बारिश हुई, आंकड़ा 40 इंच पार

- शहर की निचली बस्तियों में जलजमाव से फजीहत, यशवंत सागर का एक गेट खोला

इंदौर। जाते-जाते मानसून ने शहर में जमकर झमाझम बरसात की। शनिवार सुबह साढ़े 8 बजे समाप्त हुए पिछले 24 घंटों में इंदौर में करीब साढ़े 4 इंच बारिश दर्ज की गई। इससे बारिश का कुल कड़ा 40 इंच के पार निकल गया। इंदौर में बारिश ने राहत के साथ-साथ मुश्किलें भी दीं तालाब तो लबालब हो गए, पर कई कॉलोनियां जलमग्न हो गईं।

जिले के देपालपुर क्षेत्र में 110 मिमी, गौतमपुरा में 70 मिमी, हातोद में 84 मिमी और महू में 40 मिमी वर्षा दर्ज की गई। कल रात 10:45 बजे से शुरू हुई बारिश देर रात 4 बजे के बाद तक जारी रही। इसके चलते नीलकंठ कॉलोनी, चंद्रभागा, कलालकुई मस्जिद, हवा बंगला और एरोड्रम क्षेत्र की कॉलोनियों में घुटनों से लेकर कमर तक पानी भर गया। निगम कंट्रोल रूम पर देर रात से ही शिकायतें आती रहीं, लेकिन सुबह तक कई क्षेत्रों में पानी निकासी का काम शुरू नहीं हो पाया। जिंसी और अर्जुन पल्टन क्षेत्र में नाले का पानी घरों में घुस गया। रहवासी रातभर पानी निकालते रहे। बीआरटीएस के साथ सत्यसांई और विजयनगर की सर्विस रोड पर भी जलजमाव से सुबह वाहन चालक परेशान होते रहे। इस साल मानसून ने मध्यप्रदेश में 16 जून को दस्तक दी थी। समय से एक दिन बाद मानसून प्रदेश में एंटर हुआ था।

मौसम विभाग के अनुसार, 6 अक्टूबर तक प्रदेश के सभी जिलों से मानसून विदा हो जाता है, लेकिन नया सिस्टम बनने से विदाई की तारीख आगे भी बढ़ सकती है। भारी बारिश के कारण यशवंत सागर तालाब लबालब हो गया। जलकार्य समिति प्रभारी अभिषेक शर्मा ने बताया कि रात ढाई बजे बढ़ते जलस्तर को देखते हुए एक गेट खोला गया और सुबह 6 बजे जलस्तर सामान्य होने पर गेट बंद किया गया।

नगर निगम के अनुसार सिरपुर, बिलावली, पीपल्यापाला और लिम्बोदी सहित कई तालाबों में पानी भरकर वे लबालब हो गए हैं। हालांकि, चंद्रभागा हनुमान मंदिर से कलालकुई मस्जिद तक नाले का अधूरा काम फिर परेशानी का कारण बना और सड़कों पर गंदगी के साथ नाले का पानी बहता रहा।

सबसे अधिक बारिश का रिकॉर्ड

यह पिछले एक दशक में अक्टूबर महीने में हुई सबसे अधिक बारिश है। शुक्रवार सुबह से ही आसमान पर घने बादल छाए हुए हैं और मौसम वैज्ञानिकों ने बारिश की संभावना जताई है। आमतौर पर इंदौर में अक्टूबर के पहले सप्ताह तक मानसून विदा हो जाता है, जिसके बाद इस महीने में बादल बहुत कम नजर आते हैं। मौसम विभाग के अनुसार, अक्टूबर में सामान्यतः दिन गर्म और रातें ठंडी होती हैं। इस माह का औसत अधिकतम तापमान 32.8 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 18.2 डिग्री सेल्सियस रहता है। औसतन केवल 28.7 मिमी वर्षा और 2 से 3 दिन बारिश दर्ज की जाती है, लेकिन इस बार बंगाल की खाड़ी से बना चक्रवाती सिस्टम आंध्र तट को पार करते हुए इंदौर तक सक्रिय हो गया, जिससे सामान्य से कई गुना अधिक बारिश रिकॉर्ड की गई।

पुलिस, प्रशासन के रिटायर अफसर डीएवीवी परीक्षाओं में नक़ल रोकेंगे

इंदौर। इस साल होने वाली परीक्षाओं में नकल रोकने को लेकर देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी (डीएवीवी) प्रबंधन अलग ही तैयारी कर रहा है। बताया गया कि यूनिवर्सिटी नकल की रोकथाम के लिए पुलिस और प्रशासन के रिटायर्ड अधिकारियों की सेवाएं लेगी। यह सामने आया है कि तीन पूर्व डिप्टी कलेक्टर और पुलिस प्रशासन के अधिकारी भी परीक्षा को लेकर लगातार मॉनिटरिंग करेंगे।

इसके साथ ही यह अधिकारी संवेदनशील केंद्रों पर भी नजर रखेंगे और अन्य पूर्व प्रशासनिक अधिकारी परीक्षाओं को सुचारू संचालन करने के लिए मदद करेंगे। जानकारी अनुसार यूनिवर्सिटी ने करीब 50 रिटायर्ड अधिकारियों को विशेष रूप से ऑब्जर्वर के तौर पर नियुक्त किया है। इन अधिकारियों को हर संवेदनशील परीक्षा केंद्र पर तैनात किया जाएगा, ताकि परीक्षा प्रक्रिया पर सीधी नजर रखी जा सके। परीक्षा नियंत्रक प्रो अशेष तिवारी के अनुसार यह पहल न केवल नकल रोकने में मदद करेगी बल्कि परीक्षा में पारदर्शिता भी सुनिश्चित करेगी।

रिटायर्ड अधिकारी की तैनाती से यह सुनिश्चित होगा कि किसी भी परीक्षा केंद्र पर कुख्यात नकल की गतिविधियां न हो सकें। परीक्षा केंद्रों पर सीधे निगरानी रखने से पेपर वितरण और खुलने की प्रक्रिया में किसी भी तरह की गड़बड़ी की संभावना बहुत कम हो जाएगी। इस नई व्यवस्था का सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि नकल की खबरें समय रहते पकड़ी जा सकेंगी और परीक्षा केंद्रों में अनुशासन बना रहेगा। बताया जा रहा है कि यूनिवर्सिटी के इस कदम से परीक्षा प्रणाली में विश्वास बढ़ेगा और छात्रों को निष्पक्ष वातावरण में अपनी परीक्षा देने का अवसर मिलेगा। अधिकारियों ने बताया कि अब प्रत्येक संवेदनशील केंद्र पर अनुभवी अधिकारी होंगे, जो न केवल केंद्र की निगरानी करेंगे, बल्कि परीक्षा संचालन में आने वाली किसी भी समस्या को तुरंत सुलझाएंगे। इस तरह के प्रयास से यूनिवर्सिटी परीक्षा सुरक्षा को नई ऊंचाइयों तक ले जाने की दिशा में अग्रसर है।

रेलवे स्टेशन और सरवटे स्टैंड के पास का ट्रैफिक प्लान जल्द

इंदौर। रेलवे स्टेशन और उसके आसपास के क्षेत्र में लगने वाले जाम को खत्म करने के लिए जल्द ही कार्रवाई होने की संभावना है। बताया जा रहा है कि रेलवे स्टेशन के बाहर में रोड पर एक के पीछे एक लगातार खड़ी होने वाली बसों को रोकने के लिए इसमें प्लानिंग की जाएगी।

यह भी सामने आया है कि सरवटे बस स्टैंड से निकलने वाली बसें जो कि सवारी लेने के चक्कर में रेलवे स्टेशन के बाहर एक लाइन से खड़ी कर दी जाती हैं इस कारण भी यहां जाम की समस्या बढ़ रही है। इसे दूर करने के लिए पुलिस और प्रशासन शीघ्र ही प्लानिंग कर कार्रवाई करेंगे। जानकारी अनुसार रेलवे स्टेशन के बाहर और सरवटे बस स्टैंड के आसपास बसों के लगातार खड़े रहने के कारण आम वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इसे दूर करने के लिए पुलिस के पास कोई स्थाई प्लान भी नजर नहीं आ रहा है। तमाम आदेशों के बाद भी बस मालिक बसों का बाहरी मार्ग से संचालन नहीं कर रहे हैं, जिसका खामियाजा वाहन चालकों को भुगतना पड़ता है। सबसे ज्यादा परेशानी सरवटे बस स्टैंड पर होती है, जहां दिनभर यात्री बसें निकलने से जाम की स्थिति बनती है। तमाम प्रयासों के बाद भी इससे निजात नहीं मिल पाई है। ट्रैफिक पुलिस और थाने की पुलिस भी कारगर कदम नहीं उठाती, जिसका खामियाजा आमजन को भुगतना पड़ता है। दोपहिया वाहन चालकों को इस और से दूसरी ओर जाने में परेशानी आती है। जरा सी नजर चूकते ही वे हादसे के शिकार हो जाते हैं। न तो पुलिस को वाहन चालकों कीजानमाल की चिंता है और न अन्य जिम्मेदारों को। पिछले दिनों जिला प्रशासन ने ट्रेवल्स और उपनगरीय बसों को शहर के बाहर से संचालित करने के आदेश दिए थे, कुछ दिन तक कलेक्टर के आदेश का पालन हुआ, लेकिन बाद में फिर वही स्थिति निर्मित हो गई। सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में भी बसों के बाहर से संचालन को लेकर गंभीर मंथन हुआ था। बता दें, यहां पर सरवटे बस स्टैंड से चलने वाली बसें भी मुख्य गेट पर खड़ी हो जाती है। कई बार तो यह स्थिति बनती है कि मुख्य गेट से बाहर निकालना मुश्किल हो जाता है।

भाजपा का आत्मनिर्भर भारत व स्वदेशी संकल्प अभियान शुरू

इंदौर। भाजपा ने आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान और स्वदेशी संकल्प अभियान को जन-जन तक पहुंचाने की तैयारी शुरू कर दी है। इसके तहत पार्टी कार्यकर्ता घर-घर जाकर लोगों को जागरूक करेंगे और हर घर पर विशेष स्टीकर लगाए जाएंगे। नगर अध्यक्ष सुमित मिश्रा ने बताया कि भाजपा कार्यालय पर रोजाना अलग-अलग मंडल इकाइयों की बैठक कर उन्हें प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अभियान के तहत देश को आत्मनिर्भर बनाने और नागरिकों को स्वदेशी वस्तुओं की खरीदी के लिए प्रेरित किया जाएगा। दीपावली पर्व पर खास तौर पर लोगों को स्वदेशी सामान अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि हर विधानसभा क्षेत्र में 1000 स्टीकर बांटे जाएंगे। इसके बाद विधायक और पार्षद अपनी-अपनी क्षेत्रीय इकाई में उसी डिजाइन पर अतिरिक्त स्टीकर तैयार करवाएंगे। ये स्टीकर उन घरों पर लगाए जाएंगे जहां पार्टी की टीम जाकर स्वदेशी का संदेश पहुंचाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले ही देशवासियों से अपील कर चुके हैं कि दीपावली की खरीदी में स्वदेशी वस्तुओं को प्राथमिकता दी जाए।

रियायती टिकट पर यात्रा कर रहे 150 से ज्यादा यात्रियों पर एक्शन

इंदौर। इंदौर-दौंड एक्सप्रेस में देवास से लोनावला तक जाने वाले 150 से अधिक छात्रों को बिना वैध रियायती प्रमाणपत्र के यात्रा करते हुए पकड़ा गया। 152 छात्रों से रेलभाड़ा वसूला गया तथा टूर ऑर्गनाइजर से 1,17,040 का जुर्माना भी वसूल किया गया।

रतलाम मंडल को मिली सूचना के आधार पर वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक हिना केवलरमानी के निर्देशन में विशेष जांच टीम का गठन किया गया। इसमें मंडल वाणिज्य प्रबंधक राजेश मथुरिया, सहायक वाणिज्य प्रबंधक राजेश तन्ना, मुख्य वाणिज्य निरीक्षक मिक्की सक्सेना, वाणिज्य अधीक्षक अख्तर व अमित मसीह सहित 10 सदस्यीय स्क्वाड और आरपीएफ स्टाफ शामिल थे।

योजनाबद्ध तरीके से रतलाम स्टेशन से ट्रेन के प्रस्थान के बाद टीम ने सभी शयनयान कोचों की जांच की। जांच के दौरान टूर ऑर्गनाइजर से रियायत पत्र एवं वैध यात्रा प्रमाण मांगा गया। लेकिन। वह प्रस्तुत करने में असमर्थ रहा। पूछताछ में ऑर्गनाइजर ने स्वीकार किया कि टिकट एक एजेंट के माध्यम से तैयार करवाए गए थे। उनका बयान भी टीम द्वारा दर्ज किया गया। टूर ऑर्गनाइजर द्वारा बताए एजेंट के विरूद्ध उचित कार्यवाही करने के लिए प्रकरण रेलवे सुरक्षा बल/जीआरपी को भेजा जाएगा।

नियमों के अनुसार कुल 152 छात्रों से रेलभाड़ा वसूला गया तथा टूर ऑर्गनाइजर से 1,17,040 का जुर्माना वसूल किया गया। रतलाम मंडल के इतिहास में यह पहली बार है जब इतनी बड़ी संख्या में रियायती टिकट का दुरुपयोग करते हुए अवैध यात्रा करने वालों को पकड़ा और कार्रवाई की गई। इसे मंडल की एक बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है। पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल यात्रियों को सुरक्षित, सुविधाजनक और सुखद यात्रा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। नियमित ट्रेनों के साथ-साथ विशेष ट्रेनों का संचालन भी इसी उद्देश्य से किया जाता है।

यात्रियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए रेलवे विभिन्न श्रेणियों के लिए रियायती टिकट उपलब्ध कराता है। इन्हीं में विद्यार्थियों के लिए रियायती प्रमाणपत्र के आधार पर किराए में छूट दी जाती है। कुछ लोग इस सुविधा का अनुचित लाभ उठाने का प्रयास करते हैं।

मालवा मिल-पाटनीपुरा पुल की पोल खुली

इंदौर। विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 2 में मालवा मिल-पाटनीपुरा रोड पर बने नए पुल का गुरुवार सुबह बड़े उत्साह के साथ उद्घाटन किया गया था। जिम्मेदारों ने दावा किया था कि यह पुल आधुनिक तकनीक से बनाया गया है और यहां जलभराव की समस्या अब नहीं होगी। लेकिन उद्घाटन के महज 36 घंटे बाद हुई पहली ही बारिश में इन सभी दावों की हवा निकल गई। रात को हुई बरसात के दौरान पुल पर जगह-जगह पानी भर गया, जिससे दोपहिया वाहन चालकों और राहगीरों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। लोगों का कहना है कि पुराने पुल पर भी यही स्थिति रहती थी, फिर छह माह की मेहनत और करोड़ों रुपये खर्च करने के बाद भी हालात क्यों नहीं बदले? अब स्थानीय लोग सवाल पूछ रहे हैं कि क्या उद्घाटन के लिए पुल तैयार था या सिर्फ रिबन काटने की जल्दबाजी में इसे अधूरा छोड़ दिया गया? फिलहाल अब निगाहें जिम्मेदारों पर हैं कि वे इस लापरवाही पर कब और कैसी कार्रवाई करते हैं।

विजय रांगणेकर

केलिप्सो की धुन सा थिरकता वेस्टइंडीयन क्रिकेट

टीम का सफर साल 1880 से शुरु हुआ. पहली बार यह टीम कैनेडा और यूनाइटेड स्टेट के दौरे पर गई. धीरे-धीरे टीम ने अपनी साख को मजबूत किया और फिर साल 1926 में वेस्टइंडीज क्रिकेट बोर्ड, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट का हिस्सा बन गया. अगली कड़ी में 1928 में वेस्टइंडीज़ क्रिकेट टीम ने अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय टेस्ट मैच खेला. यह वह दौर था, जब विश्व क्रिकेट में आस्ट्रेलिया का कब्जा था. सर डॉन ब्रैडमैन जैसे दिग्गज खिलाड़ी आस्ट्रेलिया की अगुवाई करते थे. करीब दो दशक तक कोई भी आस्ट्रेलियाई के सामने खड़ा नहीं हो सका. मगर समय बदला और वेस्टइंडीज़ क्रिकेट टीम में कुछ दिग्गज जुड़े, जिन्होंने क्रिकेट को एक नया मुकाम दिया. सर विव रिचर्ड, डेसमंड हेवनस और गॉर्डन ग्रीन डज जैसे बल्लेबाज किसी भी टीम की गेंदबाजी की कमर तोड़ देते थे. वहीं माइकल होल्डिंग, कोलिन कॉफ्ट, मैलकॉल्म मार्शल, एंडी रोबर्ट, जैसे गेंदबाज बल्लेबाजों के दिलों में डर पैदा कर देते थे।

वेस्टइंडीज के नाम से हवा में झूमते ताड़ के पेड़, रमणीय समुद्र तट, शोख कपड़े पहने युवा, रम, केलिप्सो और क्रिकेट की मनोहारी छबि उभरती है. यह एक अद्भुत बात है कि केवल क्रिकेट के मामले में ही वेस्ट इंडीज, वेस्ट इंडीज है . अन्य सभी मामलो में जमैका, बारबडोस, गुयाना और ट्रिनिडाड है - फाउन्टेन पेन के छिंटो जैसे छोटे बड़े द्वीपों का समूह. इन द्वीपों का स्वतंत्र भौगोलिक और राजनितिक अस्तित्व है, आपसी तनाव और झगडे भी है. अन्य सभी खेलों में ये सभी स्वतंत्र देशो के रूप में भाग लेते है. लेकिन सिर्फ क्रिकेट के मामले में ये एक हो जाते है. यह एकता 1927 में वेस्ट इंडीज को टेस्ट स्तर प्राप्त होने से ही बरक़रार है।

टीम का सफर साल 1880 से शुरु हुआ. पहली बार यह टीम कैनेडा और यूनाइटेड स्टेट के दौरे पर गई. धीरे-धीरे टीम ने अपनी साख को मजबूत किया और फिर साल 1926 में वेस्टइंडीज क्रिकेट बोर्ड, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट का हिस्सा बन गया. अगली कड़ी में 1928 में वेस्टइंडीज़ क्रिकेट टीम ने अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय टेस्ट मैच खेला. यह वह दौर था, जब विश्व क्रिकेट में आस्ट्रेलिया का कब्जा था. सर डॉन ब्रैडमैन जैसे दिग्गज खिलाड़ी आस्ट्रेलिया की अगुवाई करते थे. करीब दो दशक तक कोई भी आस्ट्रेलियाई के सामने खड़ा नहीं हो सका. मगर समय बदला और वेस्टइंडीज़ क्रिकेट टीम में कुछ दिग्गज जुड़े, जिन्होंने क्रिकेट को एक नया मुकाम दिया. सर विव रिचर्ड, डेसमंड हेवनस और गॉर्डन ग्रीन डज जैसे बल्लेबाज किसी भी टीम की गेंदबाजी की कमर तोड़ देते थे. वहीं माइकल होल्डिंग, कोलिन कॉफ्ट, मैलकॉल्म मार्शल, एंडी रोबर्ट, जैसे गेंदबाज बल्लेबाजों के दिलों में डर पैदा कर देते थे।

अपनी काबलियत की बदौलत टीम ने आस्ट्रेलिया जैसी टीम को पछाड़ 1975 से 1995 तक अपनी बादशाहत कायम रखी. इस समय में टीम ने कुल 137 मैच खेले, जिनमें से 71 मैचों में टीम ने जीत हासिल की. जबकि, 80 के दशक से लेकर 90 के दशक तक टीम ने कुल 31 टेस्ट सीरीज खेली थीं, जिनमें से उसे 21 जीत के साथ सिर्फ एक हार मिली थी. आज भी क्रिकेट के इतिहास में यह एक बड़ा कीर्तिमान है. वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम का यह विजय रथ सिर्फ टेस्ट मैचों तक ही सीमित नहीं था, बल्कि एकदिवसीय क्रिकेट में भी इनका कोई सानी नहीं था यादगार जीतों में एक सीरिज 1975 की भी है, जब यह टीम आस्ट्रेलिया दौरे पर थी. इस दौरे में क्लाइव लॉयड की अगुवाई में वेस्टइंडीज ने आस्ट्रेलिया को 5-1 से मात दी थी. जीत का यह दौर यहीं नही थमा. इस टीम ने विश्वकप में भी बेहतरीन खेल का प्रदर्शन किया और 1975 में विश्व विजेता टीम का खिताब अपने नाम किया. विश्वकप के बाद भी टीम लगातार बेहतरीन प्रदर्शन करती रही. टीम के खिलाड़ियों का प्रदर्शन अगले चार सालों तक यूं ही कायम रहा, जिसकी बदौलत इस टीम ने 1979 का विश्व विजेता का खिताब भी अपने नाम कर लिया. इस तरह करीब 2 दशक तक वेस्टइंडीज़ का यह विजय रथ चलता रहा।

90 के दशक के बाद टीम के कई सीनियर खिलाड़ियों ने क्रिकेट को अलविदा कह दिया.बस यही से वेस्टइंडीज की स्थिति डगमगा गई.हालांकि, इस दौरान ब्रायन लारा ने टीम को अपनी मजबूत बल्लेबाजी से सहारा दिया. उन्होंने 1995 से लेकर 2007 तक टीम का नेतृत्व किया. इस बीच टीम ने कुल 125 एकदिवसीय मैच खेले, जिनमें 59 मैचों में टीम को जीत मिली और 59 में हार. मगर फिर भी इस समय तक इस टीम की गिनती दुनिया की दिग्गज टीमों में होती रही.मगर जैसे-जैसे वक्त बीता, वैसे-वैसे इस टीम का प्रदर्शन लगातार गिरता गया.इसकी एक वजह वेस्टइंडीज क्रिकेट बोर्ड को भी माना जाता है. कहा जाता है कि जिस दौर में क्रिकेट एक प्रोफेशनल खेल बन गया, उस समय वेस्टइंडीज क्रिकेट बोर्ड ने क्रिकेट पर से अपनी पकड़ खो दी. वह अपनी साख तक को बरकरार नहीं रख सका. वेस्ट इंडीज क्रिकेट का चरित्र भी कुछ अलग है. किसी मैच में जब ऐसा लगता है की जीत का लक्ष्य आसान और उनके पहुँच में है तो वे आसानी से समर्पण कर हार जाते है. और जब जीत का लक्ष्य लगभग असंभव है वे बड़ी सहजता से हासिल कर लेते है।

मैदान में अफगानिस्तान और वेस्टइंडीज के बीच वर्ल्ड कप-2019 क्वालिफायर मैच खेला जा रहा था. मैच की शुरुआत वेस्टइंडीज ने की. इस दौरान अफगानिस्तान के गेंदबाजों ने शानदार गेंदबाजी का प्रदर्शन किया और वेस्टइंडीज की पारी को 204 रनों पर सिमेट दिया। वेस्टइंडीज द्वारा इस लक्ष्य को अफगानिस्तानी बल्लेबाजों ने आसानी से पार कर मैच को अपने नाम कर लिया. मैच के बाद मैदान में मौजूद क्रिस गेल व अन्य खिलाड़ियों के चेहरे से वो हंसी गायब थी, जो हमेशा दिखती है. मैच हारने का दुःख साफ तौर पर खिलाड़ियों के चेहरे पर दिख रहा था. वैसे तो क्रिकेट में इस तरह हार-जीत का सिलसिला चलता रहता है, किन्तु इस मैच का जिक्र यहां विशेष तौर पर इसलिए क्योंकि यह वेस्टइंडीज के आगे के सफर पर सवाल खड़ा कर दिया था। यह संभव है कि कुछ लोग इस दिग्गज टीम के इतिहास से परिचित न हो और वह इसे एक निम्न श्रेणी की टीम मान लें. मगर सच तो यह है कि इस टीम का इतिहास बहुत सुनहरा रहा है. यह वह वेस्टइंडीज टीम है, जिसके नाम दो वर्ल्ड कप जीतने का खिताब है और यह तीन बार वर्ल्ड कप फाइनल खेल चुकी है।

क्रिकेट हमेशा से वेस्टइंडीज़ के लोगों के लिए एक भावनात्मक खेल रहा. मगर ये खेल अब उन्हें भावनाओं के अलावा और कुछ नहीं दे पा रहा था. पैसों के अभाव ने टीम की आपसी एकता और प्रदर्शन दोनों को प्रभावित किया, जिसके परिणाम टीम के खिलाफ रहे. एसा नहीं है कि आज वेस्टइंडीज में अच्छे खिलाड़ियों का अकाल पड़ गया हो. आज भी उनके पास अच्छे बल्लेबाज हैं। हां उनकी गेंदबाजी का स्तर खास नहीं है, आज विंडीज टीम में जो बड़ी कमी है वो है एकजुटता और निरंतरता की। बोर्ड और खिलाड़ियों के बीच की अंतर्कलह भी आग में घी का काम कर रही है. लेकिन यदि वेस्टइंडीज टीम अपनी इन कमियों पर काबू कर ले तो छोटे प्रारूप में अपने इतिहास की पुनरावृत्ति भले ही पूरी तरह न सही पर कुछ हद तक जरूर कर सकती है। लेकिन टेस्ट क्रिकेट में उसका पुराना मुकाम हासिल करना फ़िलहाल तो मुश्किल दिख रहा है।

लघुकथा

तृप्ति

प्रगति त्रिपाठी, बैंगलुरू

सुबह - सुबह काशी पहुंचकर पंडित जी के साथ अम्मा के श्राद्ध की पूजा पूरे विधि -विधान से करने लगा। दिसंबर का महीना था, चारों ओर धुंध फैली थी। ठंड इतनी थी की मेरी हड्डियों से भी कांपने की आवाज सुनाई दे रही थी लेकिन अम्मा के लिए ये भी मंजूर था। सबकुछ अच्छे से हो जाए ताकि अम्मा की आत्मा को मुक्ति मिल जाए, मन में यही बात चल रही थी। मैंने अपने हाथों से इक्यावन ब्राह्मनों को भोज करवा दिया। पंडित जी को भी पूजा करवाने की मुंहमांगी दक्षिणा देकर तृप्त कर दिया था। सबकुछ होने के बाद मैंने पंडित जी से पूछा 'अब अम्मा की आत्मा तृप्त हो गई होगी ना?'

यजमान अगर आपने अपनी अम्मा के जीते जी इतने ही प्रेम और श्रद्धा से उनकी सेवा की होगी तो उनकी आत्मा प्रसन्न और तृप्त जरूर हो गई होगी।

धुंध छंट चुका था और मुझे अपने जमीर के आईने में सबकुछ साफ - साफ दिखाई दे रहा था।

सैलाब

सुरेश सौरभ

कंपकंपाने लगे उसके हाथ। फिर उसकी आँखों से सैलाब फूट पड़ा-फफकते हुए, वह बस इतना ही बोला-'हाय! बाढ़!'

राहत कर्मी बोला-'अरे! बाबा रोये क्यों जा रहे हैं- मैंने तो हाथ पर सिर्फ एक पैकेट रखा।'

'बाबा जिन्दगी भर दूसरों की मदद करते रहे-हमेशा हल-बैल का साथ रहा। और आज सब कुछ... खैर आप जाइए, मैं इन्हें समझा दूंगी।' बाबा की बेटी दुखी हृदय से बोली ।

राहत कर्मी बाढ़ पीडितों को राहत सामग्री वितरित करते हुए, आगे बढ़ रहे थे। बाबा दूर तक फैले भरे पानी और उनमें डूबे घर, खेत, खलिहानों को कातर नेत्रों से निहार रहे थे- सैलाब के पानी से अधिक उनके हृदय में जमा सैलाब था, जो हृदय से बहता हुआ दोनों आंखों से रिस रहा था।

लघुकथा विमर्श की धुरी बनती एक कृति

संतोष सुपेकर लघुकथा के क्षेत्र में एक स्थापित हस्ताक्षर हैं। इनकी लघुकथाएँ महाराष्ट्र राज्य शिक्षा बोर्ड 10 वीं के पाठ्यक्रम में शामिल हो चुकी हैं। संतोष सुपेकर हिन्दी साहित्य के एक ऐसे कर्मयोगी हैं, जिन्होंने लघुकथा को न केवल रचनात्मकता का माध्यम बनाया, बल्कि उसके वैचारिक, सामाजिक, समीक्षात्मक एवं संस्थागत पक्षों को भी गंभीरता से संबोधित किया। वे वरिष्ठ लघुकथाकार, कवि, पत्रकार और संपादक होने के साथ-साथ मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित एक प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। अब तक प्रकाशित उनकी 12 पुस्तकों में से 8 लघुकथा संग्रह इस बात के प्रमाण हैं कि उन्होंने इस विधा को जीवन का ध्येय बना लिया है।

पुस्तक समीक्षा
दीपक गिरकर
समीक्षक

'अन्वीक्षण' केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि लघुकथा साहित्य का एक दस्तावेज, एक आंदोलन, एक सशक्त आलोचनात्मक हस्तक्षेप है। यह पुस्तक उस गंभीर विमर्श का परिणाम है, जिसे संतोष सुपेकर वर्षों से गहन रूप से जीते आ रहे हैं। इस कृति में लघुकथा विधा से संबद्ध कुल छत्तीस विचारोत्तेजक लेख संकलित हैं। इनमें सुपेकर द्वारा विभिन्न लघुकथा-संग्रहों एवं संकलनों की गई सारगर्भित और सूक्ष्म समीक्षाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन समीक्षाओं के माध्यम से लघुकथा के स्वरूप, भाषा-शैली, विषय-वस्तु, शिल्प, आरंभ और अंत की तकनीकी बुनावट, रचना के सैद्धांतिक पक्ष तथा उसकी संवेदनात्मक प्रभावशीलता पर गंभीर और व्यापक चिंतन प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक न केवल लघुकथा की साहित्यिक परंपरा को समझने में सहायक है, बल्कि इस विधा के गहन अध्ययन और मूल्यांकन के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में भी प्रतिष्ठित होती है। इस पुस्तक में उन्होंने लघुकथा से संबंधित पत्राचार, समीक्षाएं, आलेख और सैद्धांतिक विश्लेषण को समावेशित किया है। संभवतः यह हिंदी साहित्य में लघुकथा पर केंद्रित अपनी तरह की पहली पुस्तक है, जिसमें विधा की गहराई, दिशा और दशा पर समग्र दृष्टि प्रस्तुत की गई है। यह पुस्तक लघुकथा को केवल रचना के स्तर पर ही नहीं देखती, बल्कि इसके शैक्षणिक, पत्रकारीय, मंचीय और सांस्कृतिक स्वीकार्यता के पक्ष को भी सामने लाती है। सुपेकर जी द्वारा विभिन्न शिक्षण संस्थानों, पत्रिकाओं और साहित्यिक संगठनों को भेजे गए पत्र इस बात का प्रमाण हैं कि वे लघुकथा को केवल लेखन का माध्यम नहीं, बल्कि साहित्यिक अधिकार के रूप में स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने यह प्रयास किया कि लघुकथा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए, उसे साहित्यिक विमर्श का हिस्सा बनाया जाए और संपादकीय प्राथमिकता दी जाए। ये पत्र अब केवल एक व्यक्तिगत प्रयास नहीं रहे, बल्कि साहित्यिक दस्तावेज बन गए हैं।लेखक ने लघुकथा विधा को समृद्ध बनाने वाले स्वर्गीय विक्रम सोनी, सुरेश शर्मा, रमेश बत्तरा एवं मधुदीप के अविस्मरणीय योगदान को ससम्मान और कृतज्ञता के साथ स्मरण किया है। पुस्तक में प्रमुख लघुकथाकारों एवं संपादकों की पुस्तकों पर की गई समीक्षाएँ लघुकथा साहित्य के वर्तमान स्वरूप, प्रवृत्तियों और चुनौतियों को उजागर करती हैं। इनमें शामिल कृतियाँ हैं-इस सदी की उम्र (विक्रम सोनी) - संपादक-डॉ. अशोक भाटिया, अंधे बहरे लोग - लेखक -सुरेश शर्मा, पड़ाव और पड़ताल (खंड 1 व 2) - संपादक-मधुदीप एवं डॉ. बलराम अग्रवाल, लघुकथा रचना पद्धति और समीक्षा सिद्धांत - डॉ. पुरुषोत्तम दुबे, धारा (जल तत्व आधारित लघुकथा संग्रह) - डॉ. वसुधा गाडगिल, अंतरा करवड़े, इंजेक्शन - राम मूरत 'राही', हिन्दी लघुकथा के सिद्धांत - भगीरथ, जिंदा मैं - अशोक जैन, शिखर पर बैठकर - संपादक- सतीश राठी। इसके साथ डॉ. वसुधा गाडगिल की कृति 'साझा मन', सदाशिव कौतुक की किताब 'संकल्प और सपने' शामिल हैं।

इन समीक्षाओं में संतोष सुपेकर का समीक्षक दृष्टिकोण संतुलित, विषय केंद्रित और आलोचनात्मक गहराई से युक्त है। वे किसी भी लेखक को सराहते हैं, तो उनके कमजोर पक्षों की ओर भी ईमानदारी से संकेत करते हैं। आज का रचनाकार लघुकथाओं में आत्मकेंद्रित लेखकीय हस्तक्षेप की प्रवृत्ति से ग्रस्त प्रतीत होता है। वह %मैं% के बोध से बाहर निकलने में असमर्थ दिखाई देता है, जिसके परिणामस्वरूप उसकी रचनाएँ प्रभावक्षमता और वस्तुनिष्ठता से वंचित रह जाती हैं। इस प्रवृत्ति की तीखी और सार्थक आलोचना सुपेकर ने अपने समीक्षात्मक लेखों में अत्यंत स्पष्टता और सजगता के साथ की है। पुस्तक में समाहित आलेख लघुकथा के विभिन्न सैद्धांतिक, भाषिक, और प्रस्तुति-आधारित पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं। इन आलेखों में सुपेकर ने लघुकथा को केवल साहित्यिक विधा न मानकर सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बताया है। वैश्विक परिवेश वाला लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें वे हिन्दी लघुकथा को अंतरराष्ट्रीय सन्दर्भों से जोड़ते हैं।

यह पुस्तक उन्होंने लघुकथा विमर्श से जुड़े सभी मनीषियों को समर्पित की है। यह समर्पण लेखक के विनम्र स्वभाव और समग्र दृष्टिकोण को दर्शाता है। यह केवल एक लेखक की किताब नहीं, बल्कि पूरे लघुकथा-जगत का साझा दस्तावेज बन जाती है। सुपेकर जी की भाषा सहज, प्रवाहमयी और आलोचनात्मक अनुशासन से युक्त है। वे किसी भी विचार को गंभीरता से, परंतु बोझिल भाषा के बिना प्रस्तुत करते हैं। पुस्तक का आवरण पृष्ठ आकर्षक है और उसका डिज़ाइन विषय के अनुकूल प्रतीत होता है। आज जब लघुकथा एक लोकप्रिय, मगर उपेक्षित समझी जाने वाली विधा के रूप में जानी जाती है, तब 'अन्वीक्षण' जैसे ग्रंथ की महत्ता और बढ़ जाती है। यह पुस्तक नवोदित लघुकथाकारों के लिए मार्गदर्शक, अनुभवी रचनाकारों के लिए चिंतन का विषय और शोधकर्ताओं के लिए दुर्लभ संदर्भ सामग्री है।यह न केवल लघुकथा की आलोचना और समीक्षा का उदाहरण प्रस्तुत करती है, बल्कि यह सिखाती है कि एक लेखक सिर्फ लिखने से नहीं, बल्कि साहित्य के लिए लड़ने से भी बड़ा बनता है। 'अन्वीक्षण' लघुकथा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपस्थिति है। यह पुस्तक साहित्य की उस विधा को न केवल पहचान देती है, बल्कि उसकी आवाज़ को मंच, पाठ्यक्रम और विमर्श में स्थायी स्थान दिलाने का प्रयास भी करती है। यह केवल एक लेखक की कृति नहीं, बल्कि एक साहित्यिक आन्दोलन की अभिव्यक्ति है। हर गंभीर लघुकथाकार, शोधार्थी, संपादक और साहित्यप्रेमी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। यह पुस्तक न केवल वर्तमान में लघुकथा विधा पर कार्य कर रहे रचनाकारों के लिए उपयोगी सिद्ध होती है, बल्कि भविष्य में इस क्षेत्र में अनुसंधान और लेखन करने वालों के लिए भी एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में प्रतिष्ठित होगी।

पुस्तक - अन्वीक्षण (लघुकथा संबंधी समीक्षाएँ, आलेख , पत्र)
लेखक - संतोष सुपेकर, प्रकाशक - अक्षरवार्ता पब्लिकेशन, उज्जैन
मूल्य - 300/- रूपए

कविता

तालाब और यादें

कमलेश कुमार दीवान

मैं पहाड़ों की तरह रह न सका
विशाल विस्तृत ऊंचाई लिए स्थिर
नदियों की तरह बह न सका
किनारों के सहारे समुंदर तक
न रह सका घाटी मैदान न पठार
न तलहटी के झरने न ही झील
बस इन सबसे बहुत दूर
एक छोटा तालाब हो गया हूं
यादों की बारिश से भर जाता हूं
और
फिर सब कुछ खाली खाली
बचपन से अब तक जीवन की
यही तो है यादों की थाली
मैं अब आदमी नहीं
यादों का एक पड़ाव भर रह गया
हूं
जो पिघलकर आंखों से बहते हुए
झरने नदी किनारों से सटकर
समुंदर तक चला जाता है
क्योंकि मैं पहाड़ों की तरह रह न
सका
ऊंचाई लिए कठोर निष्ठुर निर्मम
मैं एक तालाब हो गया हूं
जो भरा हुआ है पुरानी यादों से
अब उसमें पानी नहीं यादें हैं।

कविता

कौन हो तुम

सुधीर कुमार सोनी

यह कौन मुँह अँधेरे
लिखने लगता है सुरमयी सुबह ।
यह कौन सुनहरी शाम की गवाही में
स्याह उड़ेल देता है आकाश में
और अँधेरी रात लिखता है कभी
बिखरा जाता है उजियारा और चाँदनी
रात की शीतलता लिखता है ।
यह कौन पहाड़ों के खुरदुरे शरीर से
बहा लाता है निर्मल जलधारा
और नदी लिखता है ।
यह कौन धुँध को बटोरकर
धूप की आहट के पहले हीरे की चमक
सा पत्तों पर ओस लिखता है ।
यह कौन
मीलों तक फैलाता है वृक्षों की श्रृखंला
और जंगल बियाबान लिखता है ।
यह कौन
सिद्धहस्त घुड़सवार की तरह चढ़ता है
सूरज के घोड़े में
पलक झपकते क्षणों में अर्धवृत खींचता है
और इन्द्रधनुष लिखता है ।
यह कौन बादलों का पंख बन जाता है
उड़ता/तैरता है
और गर्जना के साथ बारिश की बूंदे लिखता है ।
यह कौन
किसान के पसीने को धरती के भीतर
सोखता है
और बारिश में मिश्रण कर लहलहाती
फसल लिखता है ।
यह कौन
फूलों को रंग बिरंगे परिधान बाँटता है
और पलाश/गुलाब/मोंगरे की
महकती सुगंध लिखता है ।
यह कौन मुठ्ठियाँ खोलकर
बिखेर जाता है आसमान में चमकती
गोटियाँ और
टिमटिमाते तारे लिखता है ।
यह कौन बाँस के फूल से अनुबंध कर
कर्णप्रिय संगीत बिखेरता है
और बाँसुरी लिखता है ।
अभिभूत हूँ मैं और हम सभी
तुम्हारी कृति से कौन
तुम कौन हो कौन हो तुम।

कुत्ता प्रबंधन शास्त्र- एमबीए से आगे का पाठ

व्यंग्य

सुदर्शन कुमार सोनी
लेखक प्रशासनिक अधिकारी हैं।

गंधर ने एक आनलाईन सर्वे किया उन सयानजनों का एक जो मेनेजमेंट डिग्रीधारी हैं पर कुत्ता नही पाले हुये हैं। दूसरे वे जिनके पास ऐसी कोई डिग्री नही है पर कुत्ते पाले हुए हैं। इस सर्वे का लब्बोललुआब यह निकल कर आया कि दूसरी श्रेणी के लोग जिनके पास मेनेजमेंट की कोई डिग्री नही पर कुत्ता था वे अपने कार्य क्षेत्र में ज्यादा सफल थे।सर्वे की कुछ महत्वपूर्ण बातें आपसे साझा कर रहा हूं ।

कुत्ता पालना केवल एक शौक नहीं है, यह एक पूर्णकालिक मैनेजमेंट कोर्स है, जिसकी फीस कोई फेकल्टी नही बल्कि खुद कुत्ता वसूलता है। जहाँ बिजनेस स्कूल के छात्र सुबह नौ बजे तक हॉस्टल से बाहर नहीं निकल पाते, वहीं कुत्ता पालक सूर्योदय से पहले ही 'डेली स्टैंड-अप मीटिंग' के लिए सड़क पर मौजूद होता है–पेट में चाय नहीं, लेकिन हाथ में लीश ज़रूर होती है। डॉग पालक यानि कुत्तेदार व्यक्ति धैर्यवान होता है क्योंकि कुत्ता कभी घड़ी देखकर पॉटी नहीं करता। मानव संसाधन प्रबंधन कुत्ता सिखाता है। घर के सभी सदस्य कुत्ते के इर्द-गिर्द नाचते हैं। कोई खाना खिलाएगा, कोई नहलाएगा, कोई घुमाएगा। कुत्ता बॉस और पूरा परिवार उसका मातहत उसके–यानी एचआर की असली परिभाषा यही है। एक तरह से कुत्ता घर का सीईओ होता है व परिवार उसका प्रबंधन प्रशिक्षु। संचार प्रबंधन का अद्भुत प्रशिक्षण होता है। कुत्ते की हर भौंक का अर्थ समझना मालिक के बस की ही बात होती।कुत्तेदार आदमी का वित्तीय प्रबंधन बेहतर होता है ? जब महंगाई में परिवार की रोटी आधी करनी पड़े ताकि कुत्ते की हड्डी पूरी रहे, तब आदमी समझता है कि सीमित संसाधनों का कैसे उपयोग किया जाए। एक अच्छे व सफल मेनेजर में समन्वय व संघर्ष प्रबंधन के गुण होना अति आवश्यक है।एक कुत्तेदार आदमी की इसमें मास्टरी होती है। कुत्तेदार इंसान क्राइसिस मैनेजर भी होता है। जरा सोचिए, कॉर्पोरेट ट्रेनिंग में आपको पढ़ाया जाता है–'बी रेडी फार अनसरटेनटी'। लेकिन कुत्ता पालक पहले ही जानता है कि अनिश्चितता का नाम है–'आज ये कहाँ पॉटी करेगा'। इस संकट-प्रबंधन को कोई मैनेजमेंट गुरु भी उतनी शिद्दत से नहीं सिखा सकता। जबकि गैर कुत्तेदार मेनेजमेंट की डिग्री लिए आदमी के हाथ पैर ऐसे अवसर पर फूल जाते हैं ।

कुत्ता पालने वाले का दिन सिचुएशनल लीडरशिप से शुरू होता है। कभी कुत्ता खींचकर गली के मोड़ पर ले जाता है, कभी बंधा हुआ इंसान उसे रोकने की कोशिश करता है। यह टग ऑफ वार नहीं, बल्कि निगोशियेसन है। एक खींचता है, दूसरा मनाता है–विन विन की असली परिभाषा यही है।फिर आता है कन्फ्लिक्ट मैनेजमेंट। मोहल्ले का बच्चा पत्थर फेंक दे या बगल वाली आंटी शिकायत कर दे कि आपका कुत्ता 'उनके गेट पर गंदगी कर गया', तो पालक को गली की संसद में स्पष्टीकरण देना पड़ता है। वहाँ कोई 'राबर्टस् रूल्स ऑफ आर्डर'नहीं चलते, केवल झगड़े और तकरार। ऐसे में कुत्ता पालक मुस्कराता है, झट आई एम सॉरी पटक देता है और अगली बार वही गलती दुबारा हो जाती है। यह कुत्ता कूटनीति नहीं तो और क्या है? जबकि मेनेजमेंट डिग्री धारी यहां चूक सकता है।कुत्ता पालना पेशेन्स टेस्ट भी है। बीमार हो गया तो आधी रात को वेटनरी डॉक्टर ढूँढना, दवा पिलाना, ये सब वही कर सकता है, जिसके पास रेजीलिएंस है। एमबीए में आपको केस स्टडी दी जाती है कि अगर प्रोडक्शन लाइन बंद हो जाए तो क्या करेंगे, लेकिन असली केस स्टडी यह है कि अगर कुत्ते ने खाना खाकर उल्टी कर दी तो क्या करेंगे। यह धैर्य की चलती फिरती पूछ हिलाती पाठशाला है । कुत्तेदार व्यक्ति निगोसियेशन का भी मास्टर होता है। कभी पत्नी से बहस कि 'इतना पैसा डॉग फूड पर क्यों', कभी बच्चों से डील कि 'पहले होमवर्क करो, तभी कुत्ता घुमाने ले जाओ'। इन छोटी-छोटी डीलस् में ही बिजनैस स्कूल का सारा क्यूरिकुलम छिपा हुआ है।हर डॉग वॉक एक बोर्ड मीटिंग है–एजेंडा हमेशा वही-कहाँ पिछवाड़े को हौले हौले झुकाना है। वहीं दूसरी तरफ वे लोग हैं जो प्रबंधन की डिग्रियों के बंडल लेकर घूमते हैं लेकिन कभी कुत्ता नहीं पाला। उन्हें पेशेन्स का 'पी' नहीं पता, कन्फिल्क्ट का 'सी' नहीं मालूम। उन्होंने 'गली के कुत्ते' से निपटना भी नहीं सीखा। जो कुत्ते की लीश संभाल ले, वह टीम भी संभाल सकता है।जो आदमी कुत्ते के गुस्से व शरारतों को झेल ले वह टफेस्ट बॉस को भी आराम से झेल सकता है।

अंत में क्रोध प्रबंधन। जब कुत्ता आपके नए जूते चबा जाए या थाली में मुंह डाल दे–तब भी आपको गुस्सा पीकर मुस्कुराना पड़ता है। यही है असली क्रोध प्रबंधन।असल में, कुत्ता प्रबंधन ही असली मैनेजमेंट है। महीने के अंत में जब जेब खाली हो और कुत्ते के लिए बिस्कुट आना बाकी हो, तब असली बजटिंग की कला समझ में आती है। बाकी सब किताबी बातें हैं। जो रोज सुबह उठकर कुत्ता घुमाता है, वही टीम लीडर बन सकता है। जो बीमार कुत्ते के इलाज में धैर्य रखता है, वही संकट में कंपनी को बचा सकता है। और जो पड़ोसी की शिकायत सुनकर मुस्करा लेता है, वही कॉर्पोरेट दुनिया में 'ग्राहक हमेशा सही है' वाली नीति निभा सकता है। जो कुत्ते का अलग अलग समय पर मूड भांप ले वो किसी ग्राहक के मूड को भी भांप सकता है। एमबीए वाले पढ़ते हैं 'समय प्रबंधन' डॉग पालक पढ़ता नही व्यवहारिक रूप से करता है 'पी प्रबंधन।' डिग्री दिखावा है, डॉग प्रबंधन असली एमबीए– मेड बाय एनीमल्सइसलिए अगर अगली बार कोई आपको बताए कि वह विख्यात प्रबंधन संस्थान से पास आउट है तो उससे पूछिए–'कभी कुत्ता पाला है?' अगर जवाब 'नहीं' है तो समझ लीजिए कि उसकी डिग्री अधूरी है। क्योंकि बिना कुत्ता प्रबंधन शास्त्र सीखे, कोई भी इंसान असली जिंदगी का मैनेजर नहीं बन सकता। एमबीए करने के बाद एक शख्स कुत्ता पाल ले तो सारी केस स्टडीज व व्यवहारिक ज्ञान एक साथ हो जाता है। गंगाधर का दावा है कि यदि आप कैट पास नही कर पा रह हों तो एक कुत्ता पाल लें आपको समग्र प्रबंधन ज्ञान घर बैठे ही मिल जाएगा।कुत्तों के अतिसमर्थन के लिए गंगाधर माफी चाहता है। आखिर यह आत्मविश्वास सुप्रीम निर्णय से ही आया है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कलाकार लक्ष्मण प्रसाद और दि साइलेंट रिदम्

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

किसी भी कलाकार के कला यात्रा में बचपन की मधुमय, स्नेहमय स्मृतियां जरूर होती हैं, इस बात को नकारा नहीं जा सकता। कलाकार कितना भी आगे क्यों न निकल जाए पर उसका भूत उसके कृतियों में किसी न किसी रूप में जरूर दर्शित होता है। बचपन के खूबसूरत यादों के सहारे यदि आगे बढ़ा जाए तो समृद्धि और भी समृद्ध होती है। सुख-दुख, हार-जीत, अच्छा-बुरा सभी को खुद में समेटे एक कलाकार जब अपनी उपस्थिति रंगों और रेखाओं के माध्यम से विशाल फलक पर दर्शाता है तो दृश्य निश्चित रूप से सभी के दिलों के बेहद करीब से होकर गुजरता है और तो और समसामयिक होने के साथ ही प्रासंगिक भी होता है। कलाकार लक्ष्मण प्रसाद, जिनके कृतियों में लट्टू, तितली, कबूतर, मोर, अनाज, फूल-पत्तियों से सजा पूरा एक शानदार, जानदार परिवेश ही होता है और जहां रंगों का प्रयोग बिल्कुल ही शांत अवस्था को दर्शाने के लिए किया गया होता है, एक बेहद ही संवेदनशील इंसान भी हैं उनका कहना है कि-मैं अपना कार्य समकालीन कला-जगत की जागरूकता और भारतीय दर्शन व सौन्दर्यशास्त्र की शाश्वत परम्पराओं, दोनों के प्रति सजग रहते हुए करता हूँ।

विज्ञान और तर्क के इस युग में जीते हुए, मैं अपने अभ्यास में विचार, रूप और अनुभूति को एकीकृत कर स्पष्टता और संतुलन लाने का प्रयास करता हूँ। कलाकार डॉ. लक्ष्मण प्रसाद का रचना संसार तमाम भावों, विचारों, लय-तालों के इर्द-गिर्द बसे अनहद परिप्रेक्षीय पटलों पर खींची गई अनकही रेखाओं के मानिंद हमेशा अनकही सी बातों के तान भले ही हों पर सागर के किनारे बसे जहांगीर आर्ट गैलरी में प्रदर्शित इनके कृतियों में अनकहे भी कहे में बदल गये हैं। आपके कृतियों में लय रचना का केन्द्रीय तत्व है। यह रूपों को जोड़ती है, गहराई के साथ अभिव्यक्ति को भी आसान बनाती है और रचती है एक नया संसार, रचना को परत-दर-परत यात्रा करने की आजादी प्रदान करती है, जहां प्रत्येक परत आवश्यक और गौण, तीक्ष्ण और धुंधले के बीच का भेद भी स्पष्ट करती है। तितलियां बिल्कुल ही सरल तरीके से बिना किसी को हानि पहुंचाए अनहद से नभ में आजादी के साथ विचरण की महात्वाकांक्षी भावों को उजागर करती हैं, अपने परों के भरोसे परतंत्रता के बेड़ी को तोड़कर स्वतंत्रता के गीत गाने को आतुर नजर आती हैं तो लट्टू भी स्वतंत्रता का ही पक्षधर हैं। हरे-भरे शुद्ध वातावरण को दर्शाने के लिए बिल्कुल ही शुद्ध और शांत रंगों का प्रयोग इनके यहां है। मयूर और मनुष्य के स्निहल संबंधों के माध्यम से प्रकृति और मनुष्यों के बीच के परिस्थितियों को भी साधने का बढ़िया प्रयोग हुआ है यहां। रंग आंखों में उतर कर धीरे-धीरे पूरे शरीर तक और अंत में दर्शकों के दिमाग और दिल तक अपनी पहुंच बना लेते हैं। शुद्ध रंगों का प्रयोग, जिन्हें सावधानी पूर्वक तकनीक के माध्यम से सुरक्षित रखा जाता है, इसी लय को और प्रखर करता है तथा कृतियों को जीवन प्रदान करता है। कृतियां वाकई जीवन को बेहद ही करीब से और करीने से प्रस्तुत करती हैं। संवाद का पूरा मंच प्रदान करती हैं दर्शकों के बीच। भीतर उठ रहे गुबारों को विचारों के द्वार तक पहुंचाती हैं। आपके कृतियों में रेखाएं भी विशेष भूमिका में होती हैं। प्रवाहमयी रेखाए, आनन्द, हर्ष और प्रसन्नता की अनुभूति को जगाती हैं, जबकि टूटी या असमान रेखाएँ विषाद और अवसाद का द्योतक बनती हैं। इस द्वैत के माध्यम से आप मानव-अनुभव के समस्त विस्तार का अन्वेषण करते हैं। आपके हाल के कृतियों में बनावट, स्वरों और रेखीय प्रवाह का सम्मिलन भी देखने को मिलता है। श्वेत-श्याम चित्रों में तो भावों और विचारों का अलग ही स्तर दिखाई पड़ता है। रेखाओं की यात्रा की बात यदि करी जाए तो दिखाई पड़ेगा कि कितनी आजादी है यहां, निडरता अपने पराकाष्ठा पर है और कृति बिल्कुल

ही भावों, विचारों की संयोजित इकाई बन पड़ी है, रेखा जहां उनके उड़ान में इंजन की भूमिका में है। कलाकार लक्ष्मण प्रसाद को बिल्कुल ही सादगी युक्त जीवन पसंद है और यही सादगी उनके कृतियों में भी स्पष्ट झलकती है अक्सर रेखाएं संगीत के समान खुद को प्रकट करती हैं, जहां तूलिका के चौड़े, समतल रंगक्षेत्रों का संतुलन कोमल रंग-स्पर्शों के साथ स्थापित होता है। इनके कृतियों में मानव-आकृतियों और प्रकृति को प्रत्यक्ष चित्रण के पर संवाद में कहीं भी पीछे नजर नहीं आती। तूलिका और रंगों के संयोजन से पटल पर खिले भावों को समझने के लिए उनके कला यात्रा को भी अनुभव करना होगा जहां रूप में नहीं, बल्कि काव्यात्मक, आभासी उपस्थिति के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास सदा दर्शित होता है। हाल के कुछ कृतियों में यूट्यूब, इंस्टा जैसे आभासीय पटल के भूमिका को भी समझा और देखा जा सकता है, हालांकि वो पूरे कृतियों पर भारी नहीं है अपितु आभासीय स्थिति में ही है पर है इस बात को झुठलाया नहीं जा सकता।

कलाकार लक्ष्मण प्रसाद की प्रत्येक कृति एक विषयगत अनुगूँज लिए होती है, जिसके केन्द्र में मानव-आकृति ही है, परन्तु वह जीवन और उसकी बहुस्तरीय भावनाओं पर व्यापक चिंतन की ओर भी खुलती है। सामाजिक परिवेश को बिल्कुल ही निजी आख्यान के तौर पर प्रस्तुत किया गया है पर समाज को प्रभावित करने वाले उद्देश्य के साथ ही वो सामाजिक हो जाता है।

'दि साइलेंट रिदम्' नाम से प्रदर्शित इन तमाम कलाकृतियों में दर्शकों को खुद की ही छाया नजर आती है, खुद का संघर्ष नजर आता है और नजर आती है जीवन की तमाम झंझावातें, अनकही घटनाएं, सपनों के अनेक लेयर्स। एक कृति जहां आकृतियां आपस में संवादरत हैं को देखकर तमाम प्रश्न मानसिक पटल पर उभर आते हैं और विशेषता देखिए कि स्वतः ही उत्तरित भी हो जाते हैं।

कबूतर, अनाज और विचारशील चित्रों पर जब दर्शकों की नजर जाती है तो संवादों के माध्यम से शांति, सुकून, स्थिरता अपने आप स्थापित हो जाती है। प्रस्तुत प्रदर्शनी गेटवे ऑफ इंडिया के पास स्थित जहांगीर आर्ट गैलरी में चल रही है जहां इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय दिल्ली के पेंटिंग के प्रोफेसर, कलाकार डॉ. लक्ष्मण प्रसाद के चित्रों को देखा जा सकता है। प्रदर्शनी का उद्घाटन विश्वनाथ साबले (डीन, गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एंड डिजाइन नागपुर) के हाथों सम्पन्न हुआ। यहां कुल 42 कृतियां प्रदर्शित हैं। यहां प्रदर्शित इन कृतियों को 6 अक्टूबर की शाम तक देखा जा सकता है।

राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण है शिक्षकों की भूमिका

विश्व शिक्षक दिवस पर विशेष

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक है।

यह दिवस मनाने का मूल उद्देश्य विश्वभर में शिक्षण और शिक्षकों के मूलभूत मुद्दों पर चर्चा करना है। वर्ष 1960 के आसपास करीब सभी देशों में शिक्षकों कोविभिन्न प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता था, जिसके लिए 5 अक्तूबर 1966 को 'टीचिंग इन फीडम संधि' को मूर्त रूप दिया गया। इसमें दुनियाभर के शिक्षकों की स्थिति को सुधारने और उन्हें जागरूक करने के लिए एक समझौता पारित किया गया। दरअसल 5 अक्तूबर 1966 को पेरिस में एक कांफैंस का आयोजन किया गया था, जिसमें शिक्षकों के अधिकार और जिम्मेदारी सहित उनसे संबंधित कई मुद्दों पर यूनेस्को तथा अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) की सिफारिशों को यूनेस्को द्वारा अपनाया गया था। यूनेस्को और आईएलओ की उस बैठक में शिक्षकों के अधिकारों, जिम्मेदारियों, रोजगार और शिक्षा के लिए दिशा-निर्देश बनाने का प्रस्ताव रखा गया था, जिसके बाद शिक्षक दिवस को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने के लिए 1994 में 100 देशों के समर्थन के साथ संयुक्त राष्ट्र में यूनेस्को की इन सिफारिशों को पारित कर दिया गया।

भारत में जहां द्वितीय राष्ट्रपति डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस के अवसर पर 5 सितम्बर को 'शिक्षक दिवस' मनाया जाता है, वहीं दुनिया के अनेक देश 5 अक्तूबर को 'विश्व शिक्षक दिवस' मनाते हैं और इस अवसर पर शिक्षकों के सम्मान में दुनियाभर के देशों में तरह-तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। दरअसल किसी भी देश के विकास की कल्पना शिक्षा के बिना बेमानी ही है, इसीलिए दुनियाभर के शिक्षकों के महत्व और उनके योगदान को सम्मान देने के लिए ही विश्व शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

यह दिवस मनाने का मूल उद्देश्य विश्वभर में शिक्षण और शिक्षकों के मूलभूत मुद्दों पर चर्चा करना है। वर्ष 1960 के आसपास करीब सभी देशों में शिक्षकों कोविभिन्न प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता था, जिसके लिए 5 अक्तूबर 1966 को 'टीचिंग इन फ्रीडम संधि' को मूर्त रूप दिया गया। इसमें दुनियाभर के शिक्षकों की स्थिति को सुधारने और उन्हें जागरूक करने के लिए एक समझौता पारित किया गया। दरअसल 5 अक्तूबर 1966 को पेरिस में एक कांफ्रैंस का आयोजन किया गया था, जिसमें शिक्षकों के अधिकार और जिम्मेदारी सहित उनसे संबंधित कई मुद्दों पर यूनेस्को तथा अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) की सिफारिशों को यूनेस्को द्वारा अपनाया गया था। यूनेस्को और आईएलओ की उस बैठक में शिक्षकों के अधिकारों, जिम्मेदारियों, रोजगार और शिक्षा के लिए दिशा-निर्देश बनाने का प्रस्ताव रखा गया था, जिसके बाद शिक्षक दिवस को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने के लिए 1994 में 100 देशों के समर्थन के साथ संयुक्त राष्ट्र में यूनेस्को की इन सिफारिशों को पारित कर दिया गया। उसी के बाद 5 अक्तूबर 1994 से अंतर्राष्ट्रीय शिक्षक दिवस की शुरुआत हुई और तभी से प्रतिवर्ष 5 अक्टूबर को इसे विश्व शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस वर्ष पूरी दुनिया 31वां विश्व शिक्षक दिवस मना रही है। यूनेस्को द्वारा विश्व शिक्षक दिवस के लिए प्रतिवर्ष एक थीम निर्धारित की जाती है और विश्व शिक्षक दिवस 2025 का आधिकारिक विषय है 'शिक्षण को एक सहयोगात्मक पेशे के रूप में पुनः स्थापित करना'। यूनेस्को, आईएलओ, यूनिसेफ और एजुकेशन इंटरनेशनल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस विषय में इस बात पर जोर दिया गया है कि शिक्षक किस प्रकार शिक्षा प्रणालियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और कक्षा के भीतर और बाहर सहयोग की परिवर्तनकारी क्षमता पर जोर देते हैं। हालांकि यूनेस्को का मानना है कि पूरी दुनिया को इस समय वैश्विक स्तर पर शिक्षकों की अभूतपूर्व कमी का सामना करना पड़ रहा है, जो उनकी कामकाजी परिस्थितियों और स्थिति में गिरावट के कारण और गंभीर हो गई है। वैसे तो व्यक्ति जीवनभर सीखता रहता है लेकिन शिक्षक के बिना सही ज्ञान नहीं मिलता, इसीलिए शिक्षक दिवस का विशेष महत्व है। 5 अक्तूबर के दिन विश्वभर में 100 से भी ज्यादा देशों में विश्व शिक्षक दिवस के अवसर पर तरह-तरह के आयोजन किए जाते हैं। प्रत्येक देश में इस दिन का अपने-अपने तरीके से स्वागत किया जाता है। कई देशों में तो इस दिन सार्वजनिक अवकाश भी रखा जाता है लेकिन वहां अवकाश के इन पलों को लोग अपने शिक्षकों के साथ किसी न किसी रूप में शेयर करते हैं। सही मायनों में विश्व शिक्षक दिवस महज सार्वजनिक अवकाश नहीं बल्कि एक वैश्विक उत्सव है।

हालांकि भारत सहित कुछ देश ऐसे भी हैं, जहां शिक्षक दिवस मनाए जाने की तारीख अलग-अलग हैं लेकिन

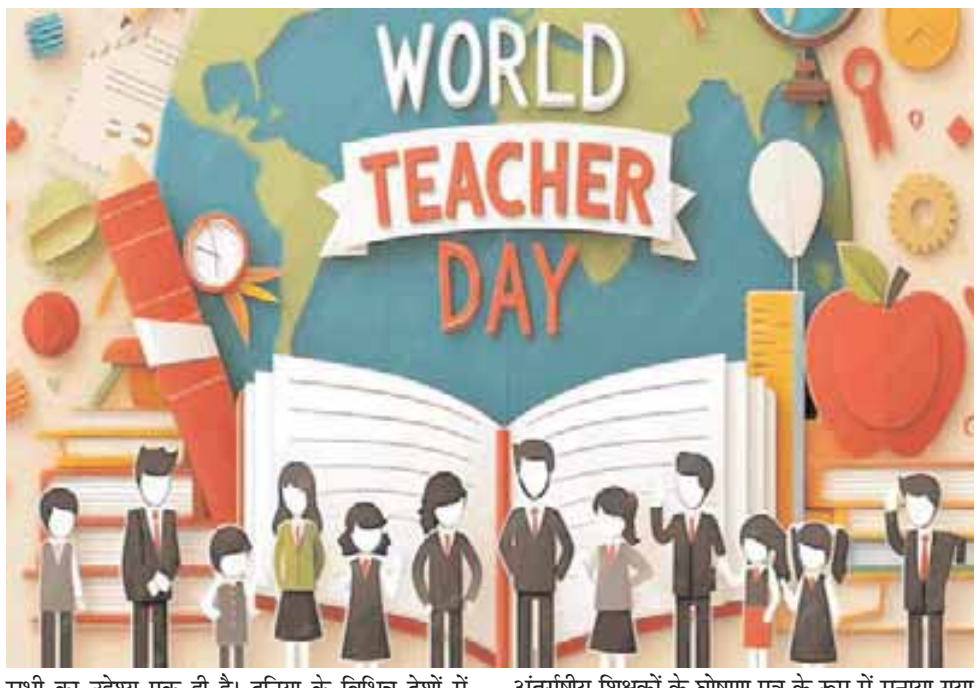

सभी का उद्देश्य एक ही है। दुनिया के विभिन्न देशों में शिक्षक दिवस भले ही अलग-अलग तारीखों में मनाया जाता हो लेकिन विश्व के प्रत्येक समाज में शिक्षकों के योगदान को देखते हुए उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के उद्देश्य से ही यह महत्वपूर्ण दिवस मनाया जाता है, जिसके माध्यम से शिक्षकों के महत्व और उनके गुणों को मान्यता दी जाती है। चीन में कन्फ्यूशियस के जन्मदिन के अवसर पर 27 अगस्त 1939 को शिक्षक दिवस मनाना आरंभ किया गया था किन्तु 1951 में यह घोषणा वापस ले ली गई और 1985 से 10 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाने लगा। रूस में 1994 से 5 अक्तूबर को ही शिक्षक दिवस मनाया जाता है किन्तु 1965 से 1994 तक अक्तूबर माह के पहले रविवार को यह दिवस मनाया जाता था। ईरान में 2 मई 1980 को प्रोफेसर अयातुल्लाह मोर्तेजा मोतेहारी की हत्या के बाद उसी दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। मलेशिया में शिक्षक दिवस को 'हरि गुरू' के नाम से जाना जाता है, जो 16 मई को मनाया जाता है। वहां 16 मई 1956 को रजाक रिपोर्ट स्वीकृत हुई थी, जिसके आधार पर वहां शिक्षा प्रणाली का चयन हुआ था। उसी दिन को बाद में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। थाईलैंड में 1957 से ही प्रतिवर्ष 16 जनवरी को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। उस दिन वहां सभी स्कूलों में अवकाश रहता है। तुर्की में यह दिवस 24 नवम्बर को जबकि अमेरिका में 6 मई को मनाया जाता है और इस उपलक्ष्य में माह के पहले सप्ताह में पूरे सप्ताह तक आयोजन होते हैं।

आस्ट्रेलिया में शिक्षक दिवस अक्तूबर महीने के अंतिम शुक्रवार को मनाया जाता है जबकि अर्जेन्टीना में इस दिवस का आयोजन डोमिनो फास्टिनो सामिएटो की मृत्यु के दिन 11 सितम्बर को किया जाता है। वियतनाम में 1958 में 20 नवम्बर को पहली बार यह दिवस अंतर्राष्ट्रीय शिक्षकों के घोषणा पत्र के रूप में मनाया गया था और 1982 में इसे पुनः नामांकित कर वियतनामी शिक्षक दिवस के रूप में घोषित किया गया। पेरू में 6 जुलाई 1953 को वहां के राष्ट्रपति मैनुएल ए आड्रिया ने एक अध्यादेश पारित कर इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में घोषित किया था जबकि पाकिस्तान में यह अंतर्राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के दिन 5 अक्तूबर को ही मनाया जाता है। चिली में 16 अक्तूबर को शिक्षकों के कॉलेज की स्थापना हुई थी, उसी उपलक्ष्य में वहां 16 अक्तूबर 1977 से इसी दिन शिक्षक दिवस मनाया जाने लगा जबकि ब्राजील में शिक्षक दिवस का आयोजन 15 अक्तूबर को किया जाता है। दरअसल 15 अक्तूबर 1827 को वहां पेड्रो ने प्राथमिक शिक्षा को नियंत्रित किया था लेकिन अधिकारिक रूप में 15 अक्तूबर को ही शिक्षक दिवस मनाने के लिए मान्यता 1963 में मिली थी। बहरहाल, यूनेस्को का कहना है कि 5 अक्तूबर को विश्व शिक्षक दिवस घोषित करने से दुनियाभर में सेवारत तमाम शिक्षकों को उनके द्वारा शिक्षा और विकास के क्षेत्र में दिए जा रहे अहम योगदान से लोगों को अवगत कराया जाता है, जिससे आम लोगों को शिक्षकों के बारे में और अधिक समझने का अवसर मिलता है। कुल मिलाकर देखा जाए तो किसी भी राष्ट्र के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक ही बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने में अपनी ऊर्जा और विद्वता को समर्पित करते हैं। जिस प्रकार एक कुम्हार कच्ची मिट्टी को ठोंक-पीटकर, आकार देकर खूबसूरत बर्तन बनाता है, ठीक उसी प्रकार एक शिक्षक भी बच्चों के कोमल बालमन को संस्कार देकर उन्हें सभ्य और बेहतर नागरिक बनाता है। वास्तव में किसी भी राष्ट्र के मानव संसाधन को मजबूत बनाने की जिम्मेदारी शिक्षकों के कंधों पर ही होती है।

सितारों से सजे चैट शो में शालीनता तो ज़रुरी है

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

काजोल और ट्विंकल खन्ना दो बड़ी हिरोइन हैं और दोनों की ही जबर्दस्त स्टार वेल्यू भी है। इस एक खूबी के साथ जब दोनों किसी चैट शो की मेज़बान (होस्ट) बने तो दर्शकों को उस चैट शो के मनोरंजन से भरपूर होने की अपेक्षा तो होनी ही थी और वैसा ही हुआ भी,पहले एपीसोड में ही भरपूर मनोरंजन दर्शकों के हाथ लगा । शो का शीर्षक भी लुभावना है - ' टू मच विद काजोल एण्ड ट्विंकल ' और शो के पहले हीएपीसोड में दर्शकों को टू मच यानी बहुत कुछ मिला । पहले ही एपीसोड में दो बड़े सितारे सलमान खान और आमिर खान आये । इस एपीसोड में इन दोनों सुपरस्टार्स ने कई खुलासे किए और कई शानदार किस्से भी चैटिंग के दौरान साझा किये जो दर्शकों को खूब पसन्द आये ।चैट शो के निहितार्थ में से एक मेहमान की उन खूबियों को सामने लाना होता है जो अभी तक केवल करीबी लोगों को ही पता होती है । ट्विंकल खन्ना और काजोल के नए चैट शो 'टू मच विद काजोल एंड ट्विंकल' का पहला एपिसोड रिलीज हो चुका है। पहले एपिसोड में ही सलमान और आमिर खानजैसे दो बड़े सुपरस्टार्स नजर आए। शो के इस एपीसोड में सलमान ने अपनी गायन क्षमता को लेकर एक बड़ा खुलासा किया। शो के दौरान दोनों होस्ट काजोल और ट्विंकल ने आमिर और सलमान से गाना गाने के लिए कहा। ट्विंकल ने आमिर से कहा हमने सुना है आप शास्त्रीय संगीत (क्लासिकल सिंगिंग) सीख रहे हैं। ऐसे में कुछ गाकर सुनाइए।' इस पर आमिर ने कहा कि मैं अभी सीख ही रहा हूँ।लेकिन सलमान बहुत अच्छा गाते हैं। फिर आमिर ने सलमान से गाने के लिए भी कहा। आमिर ने सलमान से कहा तू अच्छा गाता है, तुमने मुझे रिकॉर्डिंग्स सुनाई हैं। जिस पर सलमान ने कहा कि अरे वो रिकॉर्डिंग अलग है, असल में मेरी आवाज बहुत बुरी है। इस दौरान सलमान ने स्वीकार किया कि वो ऑटो ट्यून की मदद से गाते हैं। उन्होंने कहा कि मैं तो गाकर 5 मिनट में निकल जाता हूं। उसके बाद गाने को सुरीला बनाने के लिए बाकी लोगों को हफ्तों लगते हैं। तब जाकर वो गाना सामने आता है, जिसे सब लोग सुन सकते हैं। ये सब ऑटो ट्यून का कमाल है।

हालांकि, इसके बाद आमिर और सलमान दोनों ने ही शो पर गाना गाया। आमिर ने जहाँ पहले -' दो मस्ताने चले जिंदगी बिताने ' गाना गया। इस पर सलमान ने आमिर से कोई पुराना गाना गाने को कहा। तब आमिर ने 'अनामिका' फिल्म का गाना ' मेरी भीगी भीगी सी पलकों ' गाना गाया। इसके बाद जब सलमान की बारी आई, तो उन्होंने - 'कहीं दूर जब दिन ढल जाए' गाना सुनाया। इस चैट शो को जो प्राइम वीडियो पर दिखाया जा रहा है। हर गुरुवार को शो का नया एपीसोड रिलीज होगा। पहले एपिसोड में सलमान और आमिर के नजर आने के बाद अब फैंस दूसरे एपीसोड का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे हैं ।

शो के दौरान आमिर और सलमान ने काजोल-ट्विंकल के साथ काफी मस्ती भी की। दोनों ने कई गेम भी खेले। पूरे शो के दौरान ट्विंकल आमिर और सलमान पर मज़ाहिया अन्दाज़ में तँज भी कसती रहीं। जिस पर एक बार आमिर ने भी ट्विंकल और काजोल से कहा तुम बदतमीज हो। कुछ दर्शक इस टिप्पणी से नाराज़ हैं। सितारों से सजे चैट शो को एक बड़ा दर्शक वर्ग बड़े चाव से देखता है उसमें कुछ परिवार के बड़े बूढ़े लोग भी शामिल होते हैं अतः ऐसे चैट शो में शालीनता बेहद ज़रुरी है ।

जिले में बढ़ रहा लम्पी वायरस का खतरा, पशु पालक एवं आमजन परेशान

खुले में विचरण कर रहे बीमार मवेशी, दूसरे पशुओं में संक्रमण फैलने की बढ़ी आशंका

संजय द्विवेदी, बैतूल। जिले में भी लम्पी वायरस का खतरा दिनोंदिन बढ़ते ही जा रहा है। हालांकि पशु पालन विभाग के अनुसार अभी तक बैतूल ब्लाक में मात्र चार पशुओं में ही लम्पी वायरस के लक्षण मिले है, जिनका वैक्सीनेशन एवं उपचार भी कर दिया गया है और वह पशु ठीक भी हो रहे है, लेकिन सावधानियां नहीं बरती गई, तो लंपी वायरस के केस बढने में समय नहीं लगेगा। दरअसल यह आशंका इसलिए भी व्यक्त की जा रही है, क्योकि शहर में पूर्व की भांति पशु सडक़ो पर झुंड बनाकर विचरण कर रहे है। पशु मालिकों द्वारा भी अपने मवेशियों पर इस बीमारी को लेकर ध्यान नहीं दिया जा रहा और प्रशासन ने अभी तक सडक़ों पर घूमने वाले ऐसे मवेशियों की रोकथाम या पशु मालिकों को हिदायत देने कोई विशेष पहल नहीं की है, जिससे ऐसे पशु सीमित क्षेत्रों में ही रहे। हालात यह हो गई है कि मवेशी रोड पर खुले में भटकते हैं और लंपी वायरस के खतरे ने आमजनता की चिंता और भी बढ़ दी है। लेकिन फिर भी नगरपालिका द्वारा ऐसे मवेशियों का पता लगाकर उन्हें पकक़र गौशाला या संस्थागत स्थान पर पहुंचाने का अभियान जोरशोर से शुरू नहीं किया है।

पशु मालिक सडक़ो पर छोड़ देते है मवेशी – पशु मालिकों द्वारा मवेशियों का ध्यान नही रखा जा रहा है। जिसके चलते मवेशी सडक़ों पर ही झुंड के रूप में विचरण कर रहे है। इनमें भी लम्पी संक्रमण का खतरा और बढ़ गया है। पशुपालन विभाग के उपसंचालक डॉ. सुरजीत सिंह का कहना है कि यदि लंपी वायरस से ग्रसित पशु के संपर्क में दूसरे मवेशी आते है तो यह एक-दूसरे में तेजी से फैलता है। इसलिए सावधानी रखना बेहद जरूरी है। इसके लिए प्रायः पशु को दूसरे पशु के संपर्क में आने से बचायें और लक्षण दिखने पर तुरंत चिकित्सक को दिखाये। सावधानी से ही लंपी वायरस को हराया जा सकता है, लेकिन पशु मालिक पशुओं को बांधकर रखने के बजाये उन्हें खुले में छोड़ रहे है, इससे लंबी वायरस का खतरा और बढ़ गया है।

गौशाला में छोडऩा भी चुनौती भरा– लगातार मवेशियों का शहर की तरफ बढऩे से इन मवेशियों को गौशाला में एक साथ भेजना भी नगरपालिका के लिए चुनौती भरा कार्य है, क्योंकि आवारा पशुओं को गौशाला भेजा जाता है तो गौशाला के अन्य मवेशियों में लंपी वायरस फैलने का खतरा मंडराने लगेगा। जिसे देखते हुए शहर के जागरूक गौ सेवकों ने नगरपालिका से आवारा मवेशियों के लिए उचित स्थान तलाशने और आइसोलेशन सेंटर बनाने की मांग की, ताकि यदि कोई संक्रमित मवेशी मिलता है तो उसे उचित स्थान पर ले जाकर इलाज कराया जा सके, जिससे सड़कों पर जमा मवेशियों की सुध ली जा सके और लंपी वायरस का खतरा भी कम किया जा सके।

अभी तक 90 हजार पशुओं का किया वैक्सीनेशन– पशुपालन विभाग के उपसंचालक डॉ. सुरजीत सिंह ने बताया कि बैतूल ब्लाक के मलकापुर और बुंडाला में लंपी वायरस के चार मवेशी मिले थे। इसके अलावा महाराष्ट्र राज्य की सीमा से सटे होने और महाराष्ट्र के वरुड़ क्षैत्र में लंपी वायरस के पशु होने की जानकारी मिलने के कारण लम्पी वायरस की रोकथाम के लिए वैक्सीनेशन किया गया है। उन्होंने बताया कि अभी तक करीब 90 हजार पशुओं का वैक्सीनेशन किया जा चुका है। जबकि हमें 50 हजार पशुओं के टीकाकरण का लक्ष्य मिला था। इसके अलावा विभाग द्वारा पशु मालिकों को जागरूक भी किया जा रहा है कि वे पशुओं में लंपी वायरस के लक्षण दिखते ही तत्काल पशु को अन्य स्वस्थ मवेशियों से दूर करें, उनका चारा-पानी और बर्तन अलग रखें। जूठे चारे को गाडक़र नष्ट करें। गौशाला को मच्छर, मक्खी, किलनी और जुओं से मुक्त रखें। डॉ. सुरजीत सिंह ने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के पशु पालकों से अपील की है कि यदि पशु में लंपी वायरस के लक्षण दिखाई पड़ते है तो नजदीकी पशु चिकित्सा केंद्र या विभाग के टोल फ्री नंबर 1962 पर तुरंत सूचना देवें, ताकि पशुओं का उपचार तथा टीकाकरण समय पर किया जा सके।

इनका कहना..

जिले के सीमावर्ती क्षैत्रों में जहां-जहां से लम्पी वायरस आने की संभावना है, वहां सभी जगह टीकाकरण करवाया गया है। इसके अलावा अन्य ऐसे स्थानों जहां से लम्पी वायरस वाले पशु मिलने की जानकारी मिली है वहां भी टीकाकरण करवाया गया है। अभी तक कुल 90 हजार पशुओं का टीकाकरण हो चुका है। इसके साथ ही पशु पालकों को भी लंपी वायरस के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

– **सुरजीत सिंह,** उपसंचालक पशुपालन विभाग जिला बैतूल

प्रधानमंत्री ने बैतूल जिले की छात्रा त्रिशा को किया सम्मानित

छात्रा त्रिशा ने सेंट्रल जोन इलेक्ट्रीशियन ट्रेड में हासिल किया प्रथम स्थान

बैतूल। जिले की शासकीय एकलव्य महिला आईटीआई की छात्रा कु.त्रिशा तावड़े ने सेंट्रल जोन इलेक्ट्रीशियन ट्रेड में प्रथम स्थान प्राप्त करके राष्ट्रीय मेरिट सूची में अपना नाम दर्ज किया हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 4 अक्टूबर को विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित कौशल दीक्षांत समारोह में त्रिशा तावड़े को सम्मानित कर छात्र की सफलता को सराहा। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने समारोह में पीएम सेतु (प्रधानमंत्री स्किलिंग एंड एम्प्लॉयबिलिटी ट्रांसफॉर्मेशन थ्रू अपग्रेडेड आईटीआई) सहित अन्य युवाओं की शिक्षा और कौशल विकास से जुड़ी योजनाओं का शुभारंभ किया। छात्र त्रिशा ने सेंट्रल जोन में इलेक्ट्रीशियन ट्रेड में 1200 में से 1187 अंक लेकर प्रथम स्थान कर राष्ट्रीय मेरिट सूची में स्थान बनाया है। त्रिशा मेरिट सूची में स्थान पाने वाली मध्यप्रदेश की एक मात्र प्रशिक्षणार्थी है। जिसने बैतूल जिले और मध्यप्रदेश को गौरवान्वित किया हैं। त्रिशा तावड़े बैतूल के ग्राम भडूस के एक संघर्षशील परिवार की छात्रा है। जिनके पिता अजय तावड़े बस ड्राइवर है एवं मां श्रीमती सुशीला तावड़े गृहणी है। बड़ी बहन एकता तावड़े भी एकलव्य महिला आईटीआई बैतूल की टॉपर रह चुकी है और वर्तमान में रेलवे में एप्रेंटिस कर रही है। संस्था प्राचार्य ने बताया कि संस्था में सत्र 2024-25 में मैकेनिक कंप्यूटर हार्डवेयर ट्रेड में छात्र अरविन्द कुमरे ने पुरुष वर्ग में और छात्रा कु निकिता तायवाड़े ने महिला वर्ग में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

मुख्यमंत्री की मंशानुरूप छात्राओं की उन्नति के लिए किए जा रहे विशेष प्रयास– मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की मंशानुरूप आईटीआई में छात्राओं की उन्नति और कौशल प्रशिक्षण के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे। जिसमें महिला आईटीआई बैतूल में कौशल विकास विभाग द्वारा हुनर पहल के तहत महिला सशक्तिकरण एवं कौशल विकास के लिए विभिन्न गतिविधियां संचालित की जा रही है। प्रत्येक ट्रेड की प्रशिक्षणार्थी को 30 दिवसीय प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिसमें कम्युनिकेशन स्किल, सॉफ्ट स्किल, इंग्लिश स्पीकिंग का प्रशिक्षण सम्मिलित है। इसी प्रकार हार्टफूलनेस ध्यान प्रशिक्षण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन एवं हेल्थ क्लब गतिविधि के तहत प्रतिदिन योग एवं कराटे प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कौशल विकास विभाग के साथ वाधवानी फाउंडेशन के साथ हुए एमओयू अंतर्गत व्यक्तित्व विकास एवं यूएनएफए के तहत जीवन तरंग कक्षा आयोजित कर जीवन कौशल प्रशिक्षण दिया जा रहा है। ड्यूलिंगो एप के माध्यम से जर्मन, फ्रेंच एवं इटालियन भाषा सिखाई जा रही है। जिससे देश ही नहीं, बल्कि विदेश में भी रोजगार की संभावना बन सके। इसी अनुक्रम में प्रोजेक्ट कोड पहल के तहत रवि कोड योगी के माध्यम से कोडिंग डिकोडिंग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

बैतूल कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने भी किया सम्मानित– कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने छात्रा त्रिशा को पुष्प गुच्छ एवं मिठाई खिलाकर सम्मानित किया। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने छात्रा की इस उपलब्धि पर माता-पिता की सकारात्मक प्रेरणा, शासकीय एकलव्य महिला आईटीआई बैतूल के प्रशिक्षकों, प्राचार्य एवं स्टाफ के द्वारा दिए मार्गदर्शन की सराहना की। उन्होंने एकलव्य महिला आईटीआई द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए किए जा रहे नवाचारो एवं रोजगार प्रदान करने के लिए किए जा रहे प्रयासों की भी सराहना करते हुए आईटीआई में महिला प्रवेश में जिला बैतूल को प्रदेश में प्रथम स्थान पर लाने में दिए योगदान के साथ शत प्रतिशत प्रवेश पूर्ण करने के लिए बधाई दी।

बैतूल में गूंजा एक राष्ट्र-एक चुनाव का स्वर, सम्मेलन में प्रबुद्ध जनों ने दिया समर्थन

सेवानिवृत्त न्यायाधीश ने कहा–एकसाथ चुनाव से होगी अरबों की बचत, बढ़ेगा मतदान प्रतिशत और मजबूत होगा लोकतंत्र

बैतूल। बैतूल में एक राष्ट्र-एक चुनाव समिति के तत्वावधान में शनिवार, 4 अक्टूबर को भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी सभागृह (पीएमश्री जेएच कॉलेज परिसर) में एक राष्ट्र-एक चुनाव, राष्ट्रव्यापी विचार एवं परामर्श सम्मेलन का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके जनजातीय कार्य मंत्रालय एवं सांसद बैतूल-हरदा-हरसूद ने की तथा मुख्य वक्ता के रूप में सेवानिवृत्त न्यायाधीश एवं प्रदेश संयोजक एक राष्ट्र-एक चुनाव समिति रोहित आर्य ने विस्तृत उद्बोधन दिया। रोहित आर्य ने अपने संबोधन में कहा कि एक राष्ट्र-एक चुनाव केवल चुनावी सुधार नहीं बल्कि लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने का ऐतिहासिक कदम है। आज अलग-अलग समय पर होने वाले चुनावों पर हजारों करोड़ रुपये खर्च होते हैं, प्रशासनिक मशीनरी और सुरक्षा बलों की ऊर्जा बर्बाद होती है। यदि पूरे देश में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ होंगे तो यह धनराशि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और विकास कार्यों पर खर्च की जा सकेगी। उन्होंने आगे कहा कि लगातार चुनावों के कारण सरकारें दीर्घकालिक योजनाओं पर ध्यान नहीं दे पातीं। एकसाथ चुनाव होने से उन्हें नीतियों और योजनाओं को बेहतर तरीके से लागू करने का अवसर मिलेगा। मतदाताओं को भी लाभ होगा, क्योंकि उन्हें बार-बार मतदान करने की बजाय एक ही समय पर मताधिकार प्रयोग करना होगा। इससे मतदान प्रतिशत बढ़ेगा और लोकतंत्र और अधिक सुदृढ़ होगा। श्री आर्य ने यह भी कहा कि स्थानीय मुद्दों को भी इस प्रक्रिया से राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बनने का अवसर मिलेगा। इससे लोकतंत्र परिपक्व होगा और देश की एकजुटता मजबूत होगी। अध्यक्षीय उद्बोधन में केंद्रीय मंत्री दुर्गादास उइके ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का एक राष्ट्र-एक चुनाव का संकल्प विकसित भारत की दिशा में एक बड़ा कदम है। यह न केवल प्रशासनिक सुधार है बल्कि लोकतंत्र की मजबूती और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि लगातार चुनावों से समय और संसाधनों की बर्बादी होती है। एकसाथ चुनाव होने से ऊर्जा विकास और कल्याणकारी कार्यों में लगेगी। यह भारत को विश्व में और मजबूत बनाएगा। इस विचार और परामर्श सम्मेलन में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष राज्य मंत्री मोहन नागर, जिलाध्यक्ष भाजपा सुधाकर पवार, विधायक आमला डॉ योगेश पंडाग्रे, विधायक घोड़ाडोंगरी श्रीमती गंगा सज्जन सिंह उइके, विधायक मूलताई चंद्रशेखर देशमुख, नपाध्यक्ष बैतूल श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर मंचासिन रहे।

मुलताई देवी विसर्जन के दौरान तालाब में डूबी छात्र का 24 घंटे बाद बरामद हुआ शव

बैतूल/मुलताई। निकटतम ग्राम सोनौली में देवी विसर्जन के लिए तालाब पर गई तीन लड़कियां तालाब में डूब गई थी, उसमें से दो बालिकाओं को ग्रामीणों द्वारा बचा लिया गया, किंतु एक लडक़ी 16 वर्षीय छात्रा लापता थी, जिसे राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (एसडीआरएफ) की टीम 24 घंटे से तलाश कर रही थी जिसका शव आज 11 बजे सरोवर से निकाल लिया गया है। शो को प्रशिक्षण हेतु मुलताई सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा गया है जहां से अंतिम संस्कार के लिए उसके परिजनों को सौप दिया जाएगा। घटना के संबंध में प्राप्त जानकारी के अनुसार सोनोली गांव में शुक्रवार दोपहर करीब 12 बजे ग्रामीण देवी प्रतिमाओं के विसर्जन के लिए ग्राम के तालाब पर पहुंचे थे। इसी दौरान लक्ष्मी (16), मुस्कान (18) और मोनिका मराठी (11) तालाब में नहाने उतर गईं। बच्चियां गहराई में चली गईं और डूबने लगीं। चीखने की आवाज सुनकर मौके

पर मौजूद लोग तुरंत पानी में कूदे। मुस्कान और मोनिका को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। लेकिन लक्ष्मी का कोई पता नहीं चला था जिसकी तलाश की जा रही थी। 24 घंटे की तलाश के बाद 16 वर्षीय कक्षा दसवीं की छात्रा लक्ष्मी पिता राजेंद्र भुमरकर का शव सोनाली ग्राम के तालाब से निकाल लिया गया है। मृतक लक्ष्मी के पिता राजेंद्र भुमरकर होटल में काम करते हैं। उन्होंने बताया कि लक्ष्मी उनकी बड़ी बेटी थी, जो कक्षा दसवीं पीएम श्री कन्या शाला मुलताई की छात्रा थी। उनका एक पुत्र तरुण भुमरकर कक्षा छठवीं का छात्र है। ग्रामीणों का कहना है कि तालाब काफी गहरा है और इसके किनारों पर सुरक्षा के कोई इंतजाम नहीं हैं। विसर्जन कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे, लेकिन हादसा इतनी तेजी से हुआ कि किसी को संभलने का मौका भी नहीं मिला। शव मिलने के समाचार के बाद संपूर्ण क्षेत्र में शोक का माहौल है।

मुलताई से शुरू हुआ पुरुष मानसिक स्वास्थ्य अभियान, मेंस हेल्प सेल की रखी मांग

सेव इंडियन फैमिली बैतूल का अभियान अब ले रहा जनसमर्थन, जारी हुआ निःशुल्क हेल्पलाइन नंबर

बैतूल। पुरुष अधिकार और मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर सेव इंडियन फैमिली बैतूल (एसआईएफ बैतूल) ने शनिवार को मुलताई से नया सामाजिक अभियान शुरू किया। संगठन के संस्थापक और प्रमुख डॉ. संदीप गोहे के नेतृत्व में ताप्ती पार्क में संवाद बैठक आयोजित हुई, जिसमें बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक, युवा और पीड़ित पुरुष शामिल हुए। बैठक में प्रतिभागियों ने पारिवारिक विवादों, झूठे मुकदमों और मानसिक तनाव से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। इस दौरान पूरे जिले में मेंस हेल्प सेल की मांग की गई, जहां पीड़ित पुरुषों को काउंसलिंग, कानूनी सलाह और मानसिक स्वास्थ्य सहायता निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएगी। कार्यक्रम से पूर्व डॉ. संदीप गोहे ने मुलताई में कई जनप्रतिनिधियों और सामाजिक व्यक्तित्वों से मुलाकात की। उन्होंने पुरुषों की मानसिक स्थिति और समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार ने भी मुलाकात कर उनसे इस पहल को सामाजिक दृष्टि से सहयोग देने की अपील की । सेव इंडियन फैमिली बैतूल द्वारा चलाए जा रहे अभियान एक पेड़ पिता के नाम, एक कुर्सी मर्दों के नाम और पुरुष मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान को अब बैतूल, भोपाल और होशंगाबाद में भी जनसमर्थन मिल रहा है। आने वाले दिनों में बैतूल, इटारसी और भोपाल में जनसंवाद व काउंसलिंग सत्र आयोजित किए जाएंगे।संगठन ने पुरुषों की मदद के लिए निःशुल्क हेल्पलाइन नंबर 8882498498 भी जारी किया है, जिस पर जरूरतमंद पुरुष सीधे संपर्क कर सकेंगे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शताब्दी वर्ष पथ संचलन आज 5 अक्टूबर को, हज़ारों स्वयंसेवक होंगे शामिल

धार। विजयादशमी के अवसर पर प्रतिवर्ष निकलने वाला पथ संचलन 5 अक्टूबर को धार नगर में विराट रूप में निकलेगा । इस वर्ष नगर में निकलने वाला यह संचलन संघ के शताब्दी वर्ष में प्रवेश पर वृहद रूप में निकलेगा जो खास होगा। जिसमें संघ की 14 बस्तियां 136 मोहल्ले से सभी स्वयंसेवक किला मैदान पर एकत्रित होंगे । संचलन को लेकर पूरे नगर में भारी उत्साह देखा जा रहा है। गत 1 माह से लगभग 315 कार्यकर्ता इसकी तैयारी में जुटे हुए हैं । अनुमानित 4000 से अधिक स्वयंसेवक संचलन में सहभागिता करेंगे ।

घोष की दस इकाईयाँ करेगी उत्साह वर्धन– संचलन का विराट रूप होने से इस वर्ष संघ के घोष दल को लेकर विशेष तैयारी की गई है । जिसमें 182 वादकों ने अभ्यास किया है । संघ घोष आम समाज के लिए बहुत ही आकर्षण का केंद्र होता है । घोष को लेकर कार्यकर्ता विगत कई दिनों से निरन्तर अभ्यास कर रहे हैं वही घोष दल मे 11 पथक 1 प्रगत पथक जो कि 7 से ज्यादा रचनाओ का वादन करेंगे जिसमें मेवाड़, सोनभद्र, श्री राम,वीमीरा भूप, शिवरंजनी, उदय शामिल है । जिसके मधुर स्वर पर स्वयंसेवक कदमताल करते नजर आएंगे ।

गणवेश को लेकर आम समाज दिखा उत्साहित– संचलन के विराट स्वरूप के कारण उत्साहित स्वयंसेवकों ने घर-घर जाकर संचलन के लिए संपर्क किया है । उनके उत्साह के साथ-साथ आम समाज ने भी स्वयंसेवकों के आग्रह को स्वीकार करते हुए प्रत्येक संपर्कित व्यक्ति ने गणवेश खरीदी है । अपेक्षा से ज्यादा गणवेश बनने के कारण इस वर्ष गणवेश इंदौर, कर्णावती नगर (अहमदाबाद), से बुलवाई गई है ।

धार जिले ने करवाया स्वयं का गणवेश निर्माण– इस वर्ष गणवेश को लेकर अतिउत्साह देखने को मिला । गणवेश की बाहर से आपूर्ति ना होने के कारण धार जिले के कही ग्राम जैसे बिजुर,संदला, धामनोद, टवलाई, रिंगनोद,राजगढ़ लुन्हेरा बुजुर्ग, रामनगर (केसुर) जैसे सुदृढ़ गांव में पेंट का निर्माण हुआ है ।

स्वयं सहायता महिलाओं का समर्पण संघ के लिए अतुलनीय– इन सभी गांव में से कहीं गांव में स्वयं सहायता महिलाओं ने ही संघ की पेंट का निर्माण किया इन सभी महिलाओं ने सोयाबीन कटाई का कार्य जिसमें उन्हें पर्याप्त राशि मिलती है। वह कार्य छोड़कर संघ कार्य को अपना समझ कर बहुत ही न्यूनतम राशि पर पेंट का निर्माण किया ।इससे वास्तव में देश के प्रति महिलाओं का समर्पण उल्लेखित होता है।

कार्यक्रम दोपहर 3ः30 बजे से– संचलन के मंचीय कार्यक्रम की शुरुआत किला मैदान स्थित दोपहर 3ः30 बजे होगी । जिसमें हजारों स्वयंसेवक अनुशासित तरीके से खड़े होकर वहां से प्रचलन करेंगे। उक्त संचलन नगर के प्रमुख मार्ग से गुजरेगा जिसमें किला मैदान से प्रारम्भ होकर घोड़ा चौपाटी, पाटीदार तिराहा, कुम्हार गड्डा, बस स्टैंड, पट्टा चौपाटी, नालछा दरवाजा, पो चौपाटी, राजवाडा, आनंद चौपाटी, नर्सिंग चौपाटी, मोहन टाकिज से उदाजीराव चौपाटी होते पुनः किला मैदान में समापन होगा ।

आज मेंटनेंस के कारण बंद रहेगी बिजली

बैतूल। बिजली कंपनी द्वारा 5 अक्टूबर को 33/11 केव्ही हमलापुर सब स्टेशन का मेंटेनेंस कार्य किया जाएगा। मेंटेनेंस कार्य के चलते रविवार को प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक 33/11 केव्ही हमलापुर उपकेंद्र के खंजनपुर फीडर के दुर्गा वार्ड, कत्तल ढाना, डिपो रोड, विकास नगर, गोयल फैक्ट्री, माचना नगर, अर्जुन वार्ड तथा कालापाठा फीडर के लोहिया वार्ड, चुन्नी ढाना, राजेंद्र वार्ड, सिविल लाइंस, संजय कॉलोनी, मुर्गी चौक, शिवाजी वार्ड, स्वीपर कॉलोनी, जेएच कॉलेज रोड आदि क्षेत्र में विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। इसी प्रकार गंज फीडर के आबकारी, सिंधी कॉलोनी, देना बैंक, लोहिया वार्ड, तेल टंकी, लक्की सेंटर, कांतिशिवा टॉकीज, सेंट्रल बैंक, एसबीआई बैंक, मैकेनिक चौक, अग्रवाल पेट्रोल पंप, डॉक्टर मुले, गुरुद्वारा रोड, हाथी नाला, डॉक्टर लश्करे, बीएसएनएल ऑफिस, पुलिस क्वार्टर, हाउसिंग बोर्ड, गंज महाराष्ट्र बैंक तथा ग्रीन सिटी क्षेत्र के विनोबा नगर, विवेकानंद वार्ड, भग्गूढाना, खादी उद्योग के पास, ग्रीन सिटी, माचना नगर, हमलापुर चौक, फॉरेस्ट ट्रेनिंग सेंटर, जजेस कॉलोनी आदि क्षेत्र में विद्युत सप्लाई बंद रहेगी।

ममता गंगवाल जैन प्रबुद्ध मंच जिलाध्यक्ष नियुक्त

डिजिटल रूप में सामाजिक गतिविधियों को देगी बढ़ावा

धार। जैन समाज की कर्मठ व सक्रिय कार्यकर्ता ममता गंगवाल को समाज के राष्ट्रीय संगठन जैन प्रबुद्ध मंच का जिला अध्यक्ष नियुक्त किया है । यह नियुक्ति राष्ट्रीयअध्यक्षा बरखा बड़जात्या की सहमति से प्रदेश अध्यक्ष उपलब्धि जैन द्वारा की है। प्रदेश संगठन ने समाज सेवा एवं समाज संगठन को डिजिटल तरीके से बढ़ावा देने के लिए चलाए जा रहे जैनत्व एप को सम्पूर्ण जिले में विस्तार दे कर संगठन को मजबूत करने की अपील की है।

ममता गंगवाल ने बताया कि मंच ट्रस्ट के रूप में सामाजिक स्तर पर कार्य कर रहा है। संपूर्ण जिले की गतिविधियां जैनत्व ऐप के माध्यम से संचालित की जाएगी। इसमें पूरे देश भर से जैन समाज के सदस्यों को शामिल किया गया है।

सकल जैन समाज को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एकजुट करने की परिकल्पना अब साकार होती दिखाई दे रही है। इसी दिशा में नगर में जैन प्रबुद्ध मंच ट्रस्ट का गठन किया गया है।

संघ ने समाज की डिजिटल पहचान को मजबूत करने की दिशा में एक अहम पहल करते हुए ÷जैनत्व ऐप÷ को लॉन्च किया है, जो अब गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध है।

श्रीमती ममता ने बताया कि यह ऐप समाज जनों को एक ही मंच पर लाने का सशक्त माध्यम बनेगा। इसके माध्यम से धार्मिक, सामाजिक और सेवाकार्यों की नवीनतम जानकारी आसानी से उपलब्ध होगी। साथ ही जैन श्रावक कार्ड जैसी विशेष सुविधा भी जोड़ी गई है, जिससे प्रत्येक श्रावक को अलग डिजिटल पहचान मिलेगी।

ऐप में सामाजिक पंच व्यवस्था की भी व्यवस्था की गई है, जिसके माध्यम से छोटे-बड़े विवादों का निपटारा समाज स्तर पर सौहार्दपूर्ण ढंग से किया जा सकेगा। उनका कहना है कि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म से जुड़ने से जैन समाज की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एकता और भी मजबूत होगी।

जैन प्रबुद्ध मंच ट्रस्ट एक दूरदर्शी संगठन है जो सामाजिक प्रगति के लिए जैन समुदाय के प्रबुद्ध लोगों को एकजुट करने हेतु समर्पित है। शिक्षा, नैतिक मूल्यों और सामाजिक पहलों के माध्यम से, यह आध्यात्मिक विकास और सामूहिक उत्थान को बढ़ावा देता है।

जैनत्व ऐप– जैनत्व जैन समुदाय की वास्तविक ज़रूरतों को पूरा करने वाला एक समर्पित मंच है। हम ऐसे लोगों की एक टीम बना रहे हैं जो सम्पूर्ण जैन समुदाय की एकता और समृद्धि में विश्वास रखते हैं। ममता गंगवाल ने समाजजनों से आह्वान किया है कि वे जैनत्व ऐप को गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड कर इस डिजिटल क्रांति में सहभागी बनें।

श्रीमती गंगवाल को जिला अध्यक्ष का दायित्व मिलने पर हर्ष व्यक्त करते हुवे सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया व बताया की शीघ्र ही पदाधिकारियो की नियुक्ति कर मंच का समुचित विस्तार किया जाएगा ।जैन प्रबुद्ध मंच की डिजिटल तरीके से सामाजिक एकता को बढ़ावा देने की इस सकारात्मक पहल को देश भर से सराहना मिल रही है श्रीमती गंगवाल की नियुक्ति पर सभी स्नेही जन द्वारा बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित की गई।

द इंटरनेट मूवी डेटाबेस (आईएमबीडी) ने बीते 25 साल की सबसे लोकप्रिय फिल्मों की लिस्ट जारी की। इस लिस्ट में 2000 के बाद से रिलीज हुई कई शानदार फिल्मों के नाम शामिल हैं। इस लिस्ट में 2000 से 2025 के बीच में सबसे ज्यादा सर्च की गईं फिल्में और सितारों के नाम भी शामिल हैं। इन्हें ऑल टाइम पेज व्यूज के आधार पर रैंक किया गया। ये रिपोर्ट 130 फिल्मों पर बेस्ड है। 25 सालों में सिनेमा में काफी बदलाव आया और साथ ही बदलाव आया है दर्शकों के टेस्ट में। अब एक्टर्स से लेकर फिल्मों के कंटेंट तक के बारे में दर्शकों की समझ बढ़ी है।

इन 25 फिल्मों ने जीता हर भारतीय का दिल

25 साल की इस रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2000 से 2025 के बीच अब तक की सबसे ज्यादा पॉप्युलर फिल्मों की लिस्ट जारी की की गई है। वहीं इस लिस्ट में हाल रिलीज फिल्म 2025 की 'सैयारा' पहले नंबर पर मौजूद है। 'सैयारा' ने विक्की कौशल की 'छावा' को भी पीछे छोड़ दिया है, जो दूसरे नंबर पर है। 2025 की लिस्ट में तीसरे नंबर पर 'महावतार नरसिम्हा', चौथे नंबर पर 'ड्रैगन' और पांचवें नंबर पर 'कुली' है।

आईएमबीडी की 130 फिल्मों पर बेस्ड इस इस डेटासेट में हर साल की 5 फिल्में हैं। साल 2000 से 2005 तक की सभी टॉप फिल्मों में शाहरुख खान लीड रोल में थे, एसएस राजामौली की दो 'बाहुबली' फिल्मों के बाद के वर्षों में हिंदी स्पीकिंग रीजन से बाहर के टाइटल में काफी तेजी देखी गई। वो फिल्में जो लंबे समय तक ऑडियंस से कनेक्ट रही।

आईएमडीबी ने उन भारतीय फिल्मों की भी लिस्ट तैयार की है जो लंबे समय तक ऑडियंस से कनेक्ट रही है। इनमें वो फिल्में हैं जिनमें रिलीज़ के कई सालों बाद भी दर्शकों की दिलचस्पी में इजाफा देखने को मिली। इन फिल्मों में 'विरुमंदी' (2004), 'बैंगलोर डेज़' (2014), 'मसान' (2015), 'प्रेमम' (2015), 'बरेली की बर्फी' (2017) और 'रत्सासन' (2018) शामिल हैं। एनालिसिस के आधार पर ये फिल्में सबसे अधिक पॉप्युलर इंडियन फिल्मों की लिस्ट में शामिल हैं, पहले नंबर पर 'सैयारा' है।

फिल्मों को लेकर अब ज्यादातर फिल्ममेकर्स फूंक-फूंककर कदम रख रहे हैं। हालांकि, इन 25 सालों में अगर कुछ नहीं बदला, तो वो है कुछ सुपरस्टार्स की लोकप्रियता, जो 25 सालों से ज्यादा समय से कायम है। खास बात तो ये है कि 2014 से 2024 के बीच जिन सेलिब्रिटीज को सबसे ज्यादा पसंद किया गया है, उनमें आमिर खान और अमिताभ बच्चन को पछाड़ते हुए बॉलीवुड के किंग शाहरुख खान टॉप पर हैं। आईएमडीबी द्वारा जारी की गई 2000 से 2025 की बेस्ट फिल्मों की लिस्ट में 2000 से

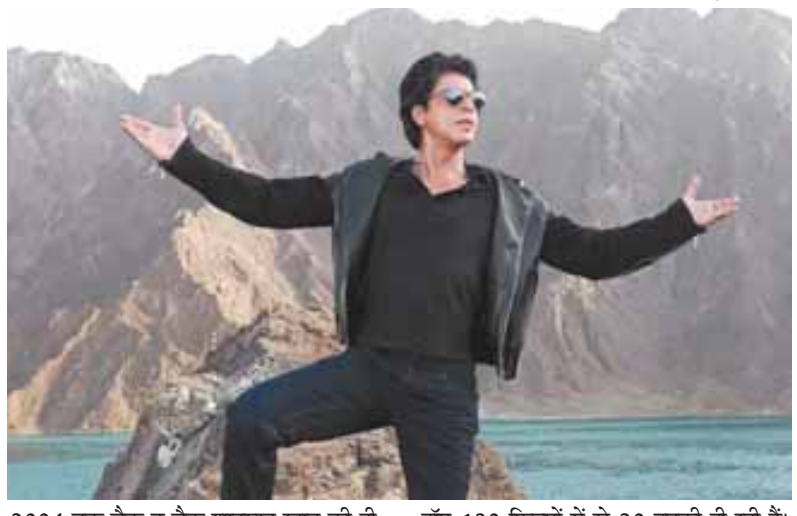

2004 तक बैक टू बैक शाहरुख खान की ही फिल्मों का दबदबा रहा। साल 2000 में मोहब्बतें, 2001 में कभी खुशी कभी गम, 2002 में देवदास, 2003 में कल हो न हो और

2004 में वीर जारा ने टॉप पर रहीं। इसके बाद 2008 में रब ने बना दी जोड़ी, 2010 में माई नेम इज खान का नाम भी इस लिस्ट में शामिल है।

शाहरुख खान के स्टारडम का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जनवरी 2014 से अप्रैल 2024 तक शाहरुख खान लगातार चार्ट पर छाए रहे हैं, और पिछले 25 सालों में रिलीज हुई टॉप 130 फिल्मों में से 20 उनकी ही रही हैं। दिलचस्प बात तो ये है जिस साल में शाहरुख की कोई फिल्म रिलीज नहीं हुई, तब भी वे देश के सबसे पॉपुलर सेलिब्रिटीज में से एक बने रहे और लगातार आईएमबीडी की वीकली टॉप 10 सेलिब्रिटी की लिस्ट में शामिल रहे, जो उनके बेजोड़ स्टारडम के बारे में बताता है।

आमिर-ऋतिक रोशन की 11-11 फिल्में- वहीं पूरे 130 फिल्मों के डेटासेट में, शाहरुख की 20 फिल्में हैं, उसके बाद आमिर खान और ऋतिक रोशन की 11-11 फिल्में। दीपिका पादुकोण 130 फिल्मों के डेटासेट में 10 फिल्मों के साथ सबसे लोकप्रिय फीमेल स्टार रहीं। 25 साल की के दौरान आखिरी सालों में दुनिया भर में अच्छा प्रदर्शन करने वाली फिल्मों में तेजी नजर आई। ये तो साफ है कि शाहरुख खान लंबे समय से दर्शकों के पसंदीदा हीरो रहे हैं। पिछले 25 वर्षों के आधार पर बनी इस लिस्ट में टॉप पर रहने वाली सात फिल्में हैं। दिलचस्प बात ये है कि उनकी 2023 की सभी कमबैक हिट फिल्मों को रणबीर कपूर की 'एनिमल' ने पछाड़ दिया।

'वार 2' की असफलता पर ऋतिक ने चुप्पी तोड़ी

ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर की 'वॉर 2' का निर्देशन अयान मुखर्जी ने किया था। उम्मीद के मुताबिक फिल्म बॉक्स ऑफिस पर खरी नहीं उतरी। ऋतिक ने सोशल मीडिया पर फिल्म की असफलता और अपने किरदार कबीर को लेकर एक पोस्ट किया। उन्होंने कबीर का किरदार निभाने के अनुभव को साझा किया। 'वॉर 2' इस साल अगस्त में बॉक्स ऑफिस पर रिलीज हुई थी। इस एक्शन थ्रिलर से मेकर्स को खास आशा थी कि ये बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा देगी लेकिन ऐसा हुआ नहीं। स्टार पॉवर की मौजूदगी भी काम नहीं आई।

फिल्म का निर्देशन अयान मुखर्जी ने और निर्माण आदित्य चोपड़ा ने किया था। हाल ही में, दुर्गा पूजा के दौरान, ऋतिक और अयान को एक साथ देखा गया। लोगों ने सोशल मीडिया पर अयान को ट्रोल करना शुरू कर दिया। अब फिल्म रिलीज के महीनेभर बाद ऋतिक रोशन ने फिल्म की असफलता और अपने किरदार कबीर को लेकर एक पोस्ट किया है।

ऋतिक ने 'वॉर 2' के सेट से कई तस्वीरें शेयर कीं और लिखा कि कबीर का किरदार निभाना बहुत मजेदार था। मैं रिलेक्स था क्योंकि मैं उसे अच्छी तरह से जानता था। यह आसान होने वाला था। आखिरकार एक ऐसी फिल्म जो मैं भी कर सकता था जैसे कई अन्य लोग करते हैं, इसे सरल रखें, अभिनेता का किरदार निभाएं, अपना काम करें और घर आ जाएं। यह बिल्कुल वैसा ही था। मेरे निर्देशक अयान ने मेरा बहुत ध्यान रखा। सेट पर उनकी ऊर्जा देखकर बहुत खुशी हुई।

आगे लिखा कि सब कुछ इतना परफेक्ट लग रहा था। जैसे ये होना ही था। पक्का इरादा था। कोई चिंता नहीं, बस मुझे अपना काम सही से करना था। और मैंने किया भी। लेकिन उस बेतुके यकीन के पीछे कुछ छिपा था। एक आवाज जिसे मैं दबाता रहा। ये बहुत आसान है... ये मैं अच्छी तरह जानता हूं। और एक और आवाज जिसने कहा कि मैं इसके लायक हूं, जरूरी नहीं कि हर फिल्म एक टॉर्चर या ट्रॉमा हो और उस पल की सच्चाई की लगातार तलाश हो। रिलेक्स करो। वैसे तो ऋतिक रोशन ने बॉक्स ऑफिस नंबर्स पर ज्यादा बात नहीं की लेकिन उनकी कुछ बातें इस ओर इशारा कर रही थीं। वॉर 2 को ऑडियंस से नेगेटिव कमेंट्स मिले थे, लेकिन कबीर के रूप में ऋतिक के अभिनय की तारीफ हुई थी।

रियल बॉक्स

मलयालम के मोहनलाल का अलग ही जलवा

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

केरल देश के छोटे राज्यों में है और यहां बोली जाने वाली मलयालम भाषा का दायरा भी सीमित है। इस भाषा में फ़िल्में भी बनती है। लेकिन, जब भी मलयालम की फिल्मों का जिक्र होता है, बात एक ही अभिनेता से शुरू होती है और उसी पर ख़त्म भी हो जाती है। ये हैं सर्वकालिक लोकप्रिय अभिनेता मोहनलाल, जिन्हें इस बार भारतीय सिनेमा का सर्वोच्च सम्मान 'दादा साहेब फाल्के' से नवाजा गया। मोहनलाल वो कलाकार हैं जिन्होंने मलयालम सिनेमा को वैश्विक पहचान दी। उन्होंने न सिर्फ अभिनय के मामले में मलयालम सिनेमा को समृद्ध किया, बल्कि व्यावसायिक रूप से भी मलयालम फिल्म उद्योग को मजबूती दी। फिल्मों के जो दर्शक इस अभिनेता की प्रसिद्धि से वाकिफ नहीं हैं, उनके लिए इतना जानना ही काफी है कि मोहनलाल को मलयाली फिल्मों का अमिताभ बच्चन कहा जाता है। दक्षिण के एक छोटे से राज्य की भाषा के इस अभिनेता को सिनेमा का सर्वोच्च सम्मान मिलना उनकी इसी अभिनय क्षमता का प्रमाण है। इस अभिनेता ने अपने चार दशक लंबे करियर में करीब 400 फिल्मों में काम किया। उन्होंने सिर्फ मलयालम ही नहीं, तेलगु और तमिल की फिल्मों में भी अपनी छाप छोड़ी है। मोहनलाल की खासियत उनकी सहज अभिनय शैली है, इस वजह से उन्हें देश में अब तक के श्रेष्ठ अभिनेताओं में गिना जाता है।

माना जाता है कि महान अभिनेता अपने अभिनय से किरदार के भीतर की उत्तेजना को वास्तविकता और संतुलित अंदाज से प्रस्तुत करते है। यही वजह है कि वे निर्देशकों की उम्मीदों से भी ऊपर प्रदर्शन करते हैं। भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में भी मोहनलाल का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है। वे न केवल एक अभिनेता हैं, बल्कि फिल्म निर्माता, प्लेबैक सिंगर और मार्शल आर्ट की कुशलता वाले योद्धा भी हैं। अभिनय में उनकी असाधारण नैसर्गिकता और भावनाओं की गहराई दर्शकों को अंदर तक उद्वेलित करती है। कथकली और भरतनाट्यम जैसे शास्त्रीय नृत्यों का सहज प्रदर्शन उनकी अद्भुत प्रतिभा का संकेत है। उन्होंने परदे पर कलारी मार्शल आर्ट में अपनी दक्षता भी दिखाई। उन्हें कई राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कारों से नवाजा गया। उन्हें भारतीय सिनेमा में पहली बार मानद लेफ्टिनेंट कर्नल की उपाधि भी प्रदान की गई। मोहनलाल मलयाली सिनेमा के बहुमुखी कलाकारों में एक हैं। उनका अभिनय, सांस्कृतिक विविधता के साथ पेशेवर क्षमता में भी अद्वितीय है। उनकी यही विशेषता उन्हें भारतीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खास बनाती है। मलयाली सिनेमा में बेहतरीन फिल्में देने के लिए मोहनलाल को पांच बार नेशनल अवार्ड मिले। 1990 (किरीदम) के लिए स्पेशल ज्यूरी अवार्ड, 1992 में बेस्ट एक्टर (भारतम), 2000 में फीचर फिल्म (वनप्रस्थानम) के लिए, 2000 में बेस्ट एक्टर (वनप्रस्थानम) और 2017 में स्पेशल जूरी (जनता गैराज, मुन्थिरिवल्लिकल थलिर्कुम्बोल, पुलिमुरुगन) के लिए उन्हें नेशनल अवार्ड से सम्मानित किया गया। इसके अलावा इस मलयालम सुपरस्टार को 2001 में पद्मश्री और 2019 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

दादा साहेब पुरस्कार हासिल करने वाले मोहनलाल दूसरे मलयाली फ़िल्मी सितारे हैं। उनसे पहले मलयालम फिल्म निर्माता अदूर गोपालकृष्णन को दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। अदूर गोपालकृष्णन को 2004 में यह पुरस्कार मिला। यह पहली बार था, जब किसी मलयालम कलाकार को दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से नवाजा गया। अदूर की एलिप्पथायम, मुखामुखम, मतिलुकल और 'निजालकुथु' जैसी फिल्मों ने मलयालम सिनेमा के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रशंसा भी हासिल की। इसे संयोग ही माना जाना चाहिए कि मोहनलाल और अदूर गोपालकृष्णन दोनों एक ही जिले पथानामथिट्टा जिले से हैं, जो केरल की समृद्ध सिनेमा विरासत का प्रतीक है। एक ने अपने यादगार अभिनय से, तो दूसरे ने अपने अनोखे निर्देशन के जरिए सिनेमा के दर्शकों का दिल जीता। उनकी यह कला केरल की कलात्मक उत्कृष्टता को दर्शाती है।

सर्वोच्च सम्मान पाने के बाद मोहनलाल ने

कहा कि मुझे यह प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान पाकर अपार गर्व का अनुभव हो रहा है। मलयालम सिनेमा का प्रतिनिधित्व करते हुए, मैं सबसे कम उम्र के पुरस्कार विजेता और सीमित साधनों से आने वाले दूसरे व्यक्ति के रूप में सम्मानित होने पर अत्यंत सम्मानित महसूस कर रहा हूं। यह मेरा नहीं, बल्कि पूरे मलयालम सिनेमा समुदाय का सम्मान है। मोहनलाल ने इस पुरस्कार को मलयालम सिनेमा की विरासत, रचनात्मकता और सहनशीलता के प्रति एक सामूहिक सम्मान बताया। यह भी कहा कि यह सम्मान उनके लिए जादुई और पवित्र क्षण है। उन्होंने इसे मलयालम सिनेमा के सभी महान कलाकारों, उद्योग और केरल के दर्शकों को समर्पित किया, जिन्होंने वर्षों से उनकी कला को स्नेह और समझ के साथ पोषित किया। मोहनलाल ने कुमारन आशान की एक पंक्ति का उल्लेख करते हुए कहा कि यह फूल केवल धूल में नहीं गिरा, बल्कि जीवन को सुंदरता के साथ जिया। यह पुरस्कार उन सभी कलाकारों को श्रद्धांजलि है, जिन्होंने अपनी प्रतिभा और मेहनत से सिनेमा में अमिट छाप छोड़ी।

अभिनय के मामले में मोहनलाल की तुलना अकसर अमिताभ बच्चन से की जाती है, जो सही भी है। अमिताभ बच्चन को हिंदी सिनेमा का एक ऐसा अभिनेता माना जाता है, जिनकी अभिव्यक्ति में गहराई, गंभीरता और अभिनय शैली की एक अलग छाप है। वे संवाद अदायगी और भावनाओं को बहुत प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करते हैं। उसी तरह मोहनलाल में मेथड एक्टिंग के साथ स्टारडम का अद्भुत संयोजन है। वे ट्रेजेडी, कॉमेडी, मेलोड्रामा और रोमांस सभी तरह के कथानकों के साथ न्याय करते हुए सहजता से अभिनय करते हैं। उनकी भावनात्मक अभिव्यक्ति बेहद नैचुरल और प्रेरक कही जाती है। स्वयं अमिताभ बच्चन ने मोहनलाल की सहजता और गहरी भावाभिव्यक्ति की क्षमता की तारीफ की। यही वजह है कि मोहनलाल की गिनती सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं में होती है। जिस तरह अमिताभ बच्चन ने हिंदी सिनेमा को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया, उसी तरह मोहनलाल को भी मलयालम फिल्म उद्योग में महानायक की तरह पूजा जाता है। देश की कई भाषाओं के दिग्गज कलाकारों ने मोहनलाल के अभिनय और उनके मलयालम सिनेमा को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के प्रयासों की सराहना की है। अमिताभ बच्चन ने भी मोहनलाल को बेमिसाल प्रतिभा और प्रेरणादायक कलाकार बताया, जिससे मोहनलाल का हिंदी फिल्मों में भी प्रभाव रहा है।

मोहनलाल की फिल्में जैसे 'दृश्यम' और 'एम्पुराण' ने मलयालम सिनेमा को वैश्विक स्तर पर अलग ही पहचान दिलाई है। दोनों कलाकारों ने फिल्मों में साथ भी काम किया है। 2010 में आई फिल्म 'कंधार' में इन दोनों महान कलाकारों ने साथ अभिनय किया। इसलिए कहा जाता है कि मोहनलाल मलयालम फिल्मों के अमिताभ बच्चन हैं। इसमें अमिताभ ने बिना फीस लिए कैमियो किया था, जो उनकी दोस्ती और सम्मान को दर्शाता है। अमिताभ बच्चन की स्टारडम व्यापक है और वे कई पीढ़ियों के लिए आइकन हैं। इसी तरह मोहनलाल भी केरल के सुपरस्टार हैं, जिनकी फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड दर्ज किए हैं। उनकी लोकप्रियता मलयालम सिनेमा की सीमाओं से परे है। इस तुलना में दोनों कलाकारों के योगदान और प्रतिभा को उच्च सम्मान के साथ देखा जाता है। वे भारतीय सिनेमा के दो महान स्तंभ माने जाते हैं। उनके अभिनय के तरीके, दर्शकों के दिल में स्थान और फिल्म उद्योग में योगदान के आधार पर दोनों का अलग-अलग महत्व है, जो प्रशंसकों की पसंद पर निर्भर करता है। अमिताभ बच्चन ने मोहनलाल को बेहतरीन अभिनेता माना, जो दोनों के बीच सम्मान दर्शाता है।

मोहनलाल की लोकप्रियता का संकेत यह भी है कि उन्होंने हिंदी फिल्मों में भी काम किया। इनमें प्रमुख हैं 'कंपनी' (2002) जो मोहनलाल की पहली बॉलीवुड फिल्म थी, जिसके लिए उन्हें 'आईफा' और 'स्टार स्क्रीन अवार्ड' मिले थे। 'राम गोपाल वर्मा की आग' फिल्म 1975 की शोले की रीमेक थी, जिसमें मोहनलाल ने इंस्पेक्टर की भूमिका निभाई। मोहनलाल की कई मशहूर मलयालम फिल्मों को भी हिंदी में डब किया गया, जिनमें 'क्रिमिनल लॉयर शिव-राम' और 'गीतांजली' को काफी पसंद किया गया। इसके अलावा, मोहनलाल की कुछ मलयालम फिल्मों के हिंदी रीमेक भी बनाए गए। जैसे 'किलुक्कम' का रीमेक 'मुस्कुराहट' और 'पूचक्कारु मूक्कुथी' का रीमेक 'हंगामा' है। इसके अलावा उनकी तमिल और मलयालम फिल्मों की हिंदी डब्ड भी लोकप्रिय रही। चार दशक की अभिनय यात्रा के बाद भी मोहनलाल थके नहीं हैं। उन्होंने सम्मान के बाद कहा भी कि वे अब और ज्यादा जिम्मेदारी से अपना काम करेंगे।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

फिल्मों में खूब चमका आसमान का खोया ... खोया चांद

अशोक जोशी

देश में अब शरद पूर्णिमा मनाई जाएगी। चांद हमारे जीवन से बहुत हद तक जुड़ा है। कवियों ने कभी अपनी प्रेमिकाओं के खूबसूरत

मुखड़े की कल्पना करते हुए कहा था कि चांद सी महबूबा हो मेरी। पौराणिक कथाओं में भी चांद की चर्चा खूब हुई। वैसे देखा जाए तो चांद पर पुराण बहुत व्यापक है। कथाकारों से लेकर वैज्ञानिकों तक किसी ने भी चांद को बख्शा नहीं। तो फिर सिनेमा वाले कैसे पीछे रह जाते।

हिंदी फ़िल्मों ने हमेशा से चांद के माध्यम से दर्शकों के दिल के तारों को छेड़ने का कभी सफल तो कभी असफल प्रयास कर फिल्मों में चांदनी बिखेरने की कोशिशें की। आसमान में चांद की जितनी भी कलाएं होती है, फिल्मकारों ने भी उन तमाम कलाओं को समेट कर सेल्युलाईड पर उतारने का प्रयास किया। दूज के चांद से लेकर चौदहवीं और इससे आगे पूनम के चांद को पृष्ठभूमि में रखकर फ़िल्मों में कभी दर्शकों को गुदगुदा गया, तो कभी डराया गया है। गोया कि फिल्मवालों के लिए चांद आलराउंडर है।

धरती से लाखों मील दूर मौजूद चांद ने भी फिल्मकारों के लिए प्रस्तुति के कई दिलचस्प अवसर पैदा किए हैं। चाहे फिल्मों के शीर्षक में चांद को शामिल कर दर्शकों को सिनेमाघरों तक खींचना हो, चाहे गीतों में उसे शामिल कर नायक-नायिकाओं के सुर से सुर मिलाकर दर्शकों के होंठो को चलायमान बनाना हो या चांदनी रात में बांहों में बाहें डाले प्रेमी युगल को छेड़खानी करते दिखा बॉक्स ऑफिस के साथ परदे पर सिक्कों की बरसात करना हो, चांद ने हमेशा फिल्मकारों का साथ निभाया है।

पारिवारिक फिल्मों में भी चांद खूब चमका। जब नायिका को करवा चौथ मनानी हो, तो उसके लिए भी चांद हाजिर है। करण जौहर और आदित्य चोपड़ा ने तो अपनी फिल्मों के करवा चौथ में चांद को इतना लोकप्रिय कर दिया कि आजकल सम्पन्न परिवारों मे भी चांद चौपाटी लगाकर खाने पीने और उत्सवी माहौल में करवा चौथ मनाई जाने लगी। यदि भयावह फिल्मों की बात की जाए, तो उनमें भी चांद का

बखूबी दर्शकों को डराने का काम किया गया है। फिल्मों में जितने भी भूत प्रेत होते हैं, वे सभी पूनम की रात को ही जागृत होते है। यदि नायक के इंसान से भेडिया बनने या चलो रे डोली उठाओं कहार गीत के बाद नव विवाहित दुल्हन को उठाने के किस्से हों, सभी पूनम की रात घड़ी के कांटे के बारह बजने पर फिल्माए गए हैं। 'चांद' शीर्षक से बनने वाली फिल्मों में चांद, दूज का चांद, चौदहवीं का चांद, चांद मेरे आजा, चोर और चांद, चांद का टुकड़ा, ईद का चांद, चांदनी, ट्रिपल टू मून, पूनम और 'पूनम की रात' सहित दर्जनों फिल्में बनी और चली। यह चांद की लोकप्रियता का ही कमाल था कि गुजरे जमाने के कुछ फिल्मी कलाकारों में चांद उस्मानी, चन्द्र शेखर और चंद्रमोहन जैसे नाम शामिल हुए।

धरती से चांद जितना सुंदर दिखाई देता है, उतने ही सुंदर गीत फिल्मों के गीतकारों ने कलम बंद किए हैं। हिंदी फिल्मों में चांद पर जितने गीत बने, दिल को छोड़कर अन्य किसी विषय पर गीत नहीं बने। माहौल चाहे खुशी का हो या गम का, मिलन का हो या जुदाई का हिंदी फिल्मों में चांद को प्रतीक या गवाह बनाया गया। उठा धीरे धीरे वो चांद प्यारा प्यारा, आजा सनम मधुर चांदनी में हम, वो चांद जहां वो जाए, चांद सी महबूबा हो मेरी, चौदहवीं का चांद हो, खोया खोया चांद, चांद मेरे आजा, चलो दिलदार चलो चांद के पार चलो, धीरे धीरे चल चांद गगन मे, चांद चुराकर लाया हूँ, चांद फिर निकला मगर तुम न आए और ये चांद सा रोशन चेहरा, एक रात में दो दो चांद खिले, एक चांद आसमान में है एक मेरे पास हैं। चंदा जा रे जा, चांद सा मुखडा क्यों शरमाया, चंदा ओ चंदा सहित सैकड़ों सुरीले गीत लिखे गए हैं। ताज्जुब की बात तो यह है कि चांद की हकीकत जानने के बाद भी लिखे जा रहे हैं।

यूं तो हिंदी सिनेमा के सितारों की अलग अलग छवि रही है। लेकिन, चांद ने इन अलग-अलग छवियों वाले छैल-छबिलों को अपने साथ जोड़ने का करिश्मा कर दिखाया है। यही कारण है कि किसी एक फिल्म में राजकपूर और नरगिस की जोड़ी 'उठा धीरे धीरे वो चांद प्यारा प्यारा' का राग छेड़ती है, तो दूसरी फिल्म में रोमांटिक देव आनंद और माला सिंहा की जोड़ी 'धीरे धीरे चल चांद गगन में' गुनगुनाते दिखाई देती है, तो ट्रैजेडी किंग भी चांद को देख कर रूमानी होकर वैजयन्ती माला से 'तुझे चांद के बहाने देखूं कहे बिना नहीं रहते।

विनोद खन्ना और ऋषि कपूर दोनों 'चांदनी मेरी चांदनी' कहते हुए श्री देवी के पीछे दौड़ लगाने लगते हैं। यह चांद का ही चमत्कार है, कि फिल्मों में अक्सर गानों से दूर रहने वाले राजकुमार कभी 'चलो दिलदार चलो चांद के पार चलो' तो कभी 'चांद आहे भरेगा' गाने के लिए मजबूर हो जाते हैं। आज की हकीकत भले ही यह हो कि चांद की सतह चूमने की चाहत में चंद्रयान उसकी कक्षा में चक्कर लगा रहा हो, लेकिन हमारे फिल्मकारों ने धरती का चक्कर लगाने वाले चांद के बेशुमार चक्कर लगाए हैं। बहुत संभावना है कि यह सिलसिला आगे भी इसी तरह अनवरत चलता रहेगा।

रस्ते अलग-अलग... ठिकाना तो एक है !

प्रकाश पुरोहित

सरकार का दिल बहुत ही छोटा है..., बताइए, यदि महाराष्ट्र में पच्चीस लाख महिलाएं 'माजी लाड़की बहिन योजना' में डेढ़ हजार रुपए हर माह लेकर अमीर हुई जा रही हैं तो बेचारे चौदह हजार... जी हां... पुरुष भी यदि इसका फायदा उठाकर घर भर रहे हैं तो तकलीफ क्या है! हमारे यहां तो कहा भी जाता है कि आटे में नमक चलता है तो एक फीसद से भी कम पुरुष क्या नमक में आटे की तरह हैं?

यह आंकड़ा उससे तो कम ही है... कि हर घर से सिर्फ 'दो लाड़की बहिनों' को ही

मासिक-किस्त दी जाएगी और पता यह चल रहा है कि करीब सात लाख 'तीसरी महिला' भी है, जो यह लाभ लेकर गुलछर्रे उड़ा रही हैं। इस पर सरकार हर माह करीब चार हजार करोड़ रुपए फूंक रही है... तो सिर्फ चौदह हजार पुरुषों के शामिल होने से इतना हंगामा किसलिए!

नदी कहीं की भी हो, जाती तो समुद्र में ही है... अब डेढ़ हजार पुरुष को मिले या महिला को... जाते तो पुरुष की ही जेब में हैं ना! पुरुष की कमाई पर महिला का हक नहीं होता है, लेकिन महिला को मिले धन पर तो पुरुष का जायज अधिकार रहता है। यदि महिला पर अधिकार है तो उसके धन और कमाई पर भी।

अब इससे क्या फर्क पड़ जाता है कि महिला ने मासिक डेढ़ हजार रुपए लिए, घर पहुंची और पति ने मांग या छीन लिए। आमतौर पर तो महिलाएं खुद ही दे आती हैं, लेकिन कोई अगर स्वार्थी हो, नारी-मुक्ति आंदोलन की हवा में बह रही हो तो देने से इनकार कर दे तो ऐसे में पुरुष को मजबूर होकर हाथ उठाना ही पड़ता है और आप तो जानते ही हैं कि पुरुष इसीलिए महान है कि महिला से ज्यादा ताकतवर होता है (सोनम-कांड भूल जाएं!)।

इसी बीच सरकार की नीयत में मुझे तो खोट नजर आने लगी है कि चौदह हजार पुरुष छांट दिए... और अब बता रहे हैं कि सवा दो करोड़ में से छब्बीस लाख ऐसे/ऐसी हैं, जो गलत ले रही हैं, यानी 'लाड़की बहिन' होने के काबिल नहीं हैं। यह सोच का विषय है कि सरकार को इतनी जल्दी कैसे इलहाम हो गया। महिला में पुरुष तो फिर भी छांट सकते हैं, लेकिन महिला में से महिला कैसे अलग करेंगे।

मुझे तो लगता है कि यह स्कीम बंद करने की तैयारी है। पहले तो पुरुष निकाल दिए... फिर महिलाएं हटा दीं... तो बचेगा कौन? हो सकता है आगे चलकर सेवा-शर्तें बदल दी जाएं कि जिस इलाके में पंचायत या नगर पालिका चुनाव होंगे, वहां भी महिलाओं को ही 'मासिक-किस्त' चुनाव-माह तक मिलेगी!

यह भी सोचने की बात है कि ये सारा गड़बड़ घोटाला सिर्फ महाराष्ट्र में ही क्यों हो रहा है...? क्या इसलिए तो नहीं कि वहां खिचड़ी सरकार है? हमारे मध्यप्रदेश में देखिए... कहीं कोई गड़बड़ी नहीं है... क्या इसलिए कि एक ही दल का शासन है? अगली बार चुनाव जीतने के लिए यदि कोई दल ऐसी सुविधा देना चाहे तो ध्यान रखे कि मिली-जुली सरकार न हो... वरना गड़बड़ी तो हो कर रहेगी!

सरकार को तो पता होगा महिला हर माह डेढ़ हजार रुपए देती भी है और न देने पर पिटती है... और फिर देती है... तो क्या यही बेहतर नहीं होगा कि बहिना के नाम पर इन भाइयों को ही हर माह चुकारा कर दिया जाए! घी जब थाली में ही रहना है तो क्या फर्क पड़ता है कि रोटी के पास है या चावल के। सरकार की ऊगत नहीं उड़ रही है, यह अच्छी बात है, वरना यदि यह पता लगाना शुरू कर दिया कि महिला के खाते की किस्त किधर जा रही है तो हो सकता है सीधे कलाली को ही देना पड़ जाए, क्योंकि ज्यादातर पैसा तो यहीं खपता है!

सरकार के पास पता करने का तो तरीका नहीं है ना... कि किस्त कहां गई, बच्चों की फीस में या 'मंत्री-रिश्तेदार' की कलाली में। जब किस्त मिल रही हो, उसी समय कलाली पर भीड़ यूं ही तो नहीं बढ़ जाती होगी ना!

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

वसीयत: क्यों और कैसे की जाए?

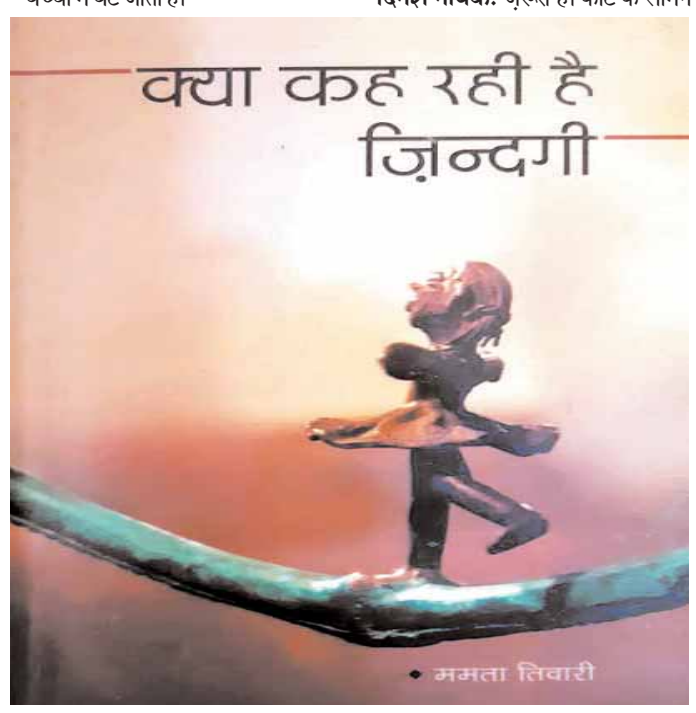

उदराज़ दोस्त बैठे थे। किसी ने वसीयत का विषय उठाया। बहस शुरू हुई। बहुत से लोगों का कहना था कि हमारे बच्चों की आपस में बहुत बनती है। उन्हें वसीयत से कोई लेना देना नहीं। फिर मैंने ऐसे प्रेम भरे परिवार के बुजुर्गों के जाने के बाद हुए झगड़ों के बारे में बताया। सोचा चलो इस पर एक कानूनी साक्षात्कार कर लिया जाए जिसमें आम आदमी क्या जानना चाहता है जैसे सवाल पूछे जाएं। हमने रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट जज, गैस राहत में कमिश्नर लॉ सेक्रट्री, एम.पी. स्टेट लीगल एथॉरिटी (साल्सा) हाइकोर्ट जबलपुर में, रेरा में पांच वर्ष और नौकरी तथा उसके बाद भी कानूनी सलाहकार के तौर पर काम करने वाले दिनेश नायक से बात की।

ममता: विल लिखी ही क्यों जाए?

दिनेश नायक: आजकल विवादों का समय है। कई बार बुजर्ग बिना विल लिखे गुज़र जाते है और बच्चों को अपने ही माता पिता की संपति पाने के लिए अनजाने रिश्तेदारों से मुकदमा लड़ने छोड़ जाते हैं। वो सिविल कोर्ट जायेंगे उत्तराधिकार के लिये क्लेम करेंगे। बच्चे बाहर हैं तो परेशानी और बढ़ जाती है। पेशी पर बार-बार आना पड़ेगा। एक जज के नाते मै कहूँगा कि लोग सोचते है बच्चों में आपस में बहुत प्रेम है इसलिए विल की जरूरत नहीं है लेकिन आपके जाने के बाद क्या होगा, यह सोचिए।

ममता: आजकल की यंग जनरेशन बड़ी जल्दी में है। वो प्रेशर बनाते हैं कि हमें विल दे दी जाये। क्या ये सही है?

दिनेश नायक: दबाव में ना बनाये और जो भी बनाये अपनी मर्जी से बनाये। बच्चे नहीं तय कर सकते कि आप हमें ये दें। ये बुजुर्गो के खिलाफ अत्याचार की श्रेणी में आयेगा।

ममता: मान लीजिये हम ने वसीयत लिख दी और फिर बच्चों के दुर्व्यवहार से तंग आकर हम विल बदलना चाहें?

दिनेश नायक: अगर विल बदलना चाहे तो आपको लिखना पड़ेंगा कि विपरीत परिस्थितियों (परिस्थिति ज़रूर डालना चाहिये) मैं प्रथम विल निरस्त करता हूँ (हो सकता है किसी को विल का पता हो) और दूसरी विल लिख रहा हूँ।

ममता: माता पिता दो बच्चो में 70 प्रतिशत और 30 प्रतिशत हिस्सा दे देते हैं तो क्या वह क्लेम कर सकता है कि मेरे साथ भेदभाव हुआ?

दिनेश नायक: माता पिता ने अपनी संपति खुद कमाई हो तो वो किसी को थर्ड पर्सन को भी दे सकते है परंतु यदि प्रापर्टी बाप दादा के जमाने की है तो उसमें वो अधिकार मांग सकता है। प्रापर्टी दो तरह की होती है एक माता पिता द्वारा कमाई और दूसरी खानदानी और उसमें उनके बच्चों का भी हक होता है पिता की मृत्यु के बाद बच्चों में बंट जाता है।

ममता: हमने सुना था पति की मृत्यु के बाद सारी संपत्ति पत्नी को मिल जाती है।

दिनेश नायक: खानदानी प्रापर्टी पर पत्नी का अधिकार नहीं होता। पति चाहे तो अपनी पत्नी को अपना अधिकार वाला हिस्सा दे सकता है अन्यथा पेट में आते ही बच्चे का खानदानी संपति पर अधिकार हो जाता है।

ममता: कुछ माता पिता आधी संपति बच्चों को आधी संपति बाद में ट्रस्ट को दे देते हैं। उनके जाने के बाद क्या होगा?

दिनेश नायक: जो ये विल पढ़के सुनायेगाा वो बतायेगा कितनी संपत्ति ट्रस्ट को जा रही है और अगर बच्चों ने चुपचाप आपसी सुलह से पूरी संपत्ति रख लेते है। परंतु जब वसीयत नामांतरण के लिये राजस्व अधिकारी के पास जायेंगे तो वो भी देखेगा और विल खुल जायेगी।

ममता: आम नागरिक नहीं जानते हैं कि हम कैसे लिखें, कैसे नामांतरण करें, किस से साइन करवायें, कहां रखें। हो सकता है हम मरणासन्न अवस्था में अस्पताल में हो और बच्चा विल बदल दे।

दिनेश नायक: एक वकील होने के नाते मैं बताता हूँ। गांव वालों को भी बताना पड़ता है कि विल बनाओ। अक्सर गांव वाले दो वसीयत लेकर आ जाते है। विल बनाते समय दो गवाहों की जरूरत होती है।

ममता: कोई जरूरी है कि गवाहों को वसीयत पढ़ाई जाए?

दिनेश नायक: ज़रूरी है। कोर्ट के सामने वसीयत आयेगी तो वो गवाह बोल सकते है कि हां ये ही सही वसीयत है। उसके बाद विल स्वस्थ व्यक्ति और भरोसेमंद व्यक्ति के पास रखी जाती है।

ममता: अगर पति पत्नी दोनो कमाते हैं तो क्या दोनों की अलग विल बनेगी?

दिनेश नायकः बिल्कुल। अगर एक ने लिखी है तो ठीक है।

ममता: और मान लो पत्नी ने नहीं लिखी तो उसके मरने के बाद संपति पति को जाएगी?

दिनेश नायक: नहीं। पत्नी की संपत्ति पति और बच्चों को बराबर बटेगी।

ममताः पर पति की मृत्यु के बाद सारी संपत्ति तो पत्नी को मिलेगी।

दिनेश नायक: नहीं उसमें बच्चे भी शामिल रहेंगे अगर उसने बसीयत नहीं लिखी तो।

ममता: एक मकान तीन बच्चों के नाम है। उनके जाने के बाद एक कह रहा है मुझे नहीं बेचना, एक कहता है मुझे पैसे की ज़रूरत है तो क्या करेंगे?

दिनेश नायक: ऐसी परिस्थिति में फैमिली कोर्ट जायेंगे। रेवेन्यू कोर्ट जायेंगे पर यदि मकान हो तो दिक्कत होती है कि ये कमरा हमारा ये पोर्शन हमारा है तो ऐसी स्थिति में लड़ाईयाँ होती है। अगर दोनों तैयार नहीं है। तीसरा अपना हिस्सा बेच सकता है।

ममता: पर कैसे? उस मकान के हिस्से होंगे?

दिनेश नायक: सिविल कोर्ट में जाकर संपत्ति का मूल्यांकन कर धनराशि को बांट सकते हैं।

ममता:- तो हमें मकान के तीन बंटवारे कर वसीयत में लिखना होगा?

दिनेश नायक: ये बिल्कुल सही होगा और अगर वो कमरों के हिसाब से नहीं हो तो लैंड की नपती के बाद आधा आधा होगा।

ममता:- अगर पति अपनी संपत्ति पूरी पत्नी को दे जाए तब?

दिनेश नायक: फिर पत्नी अपनी इच्छा से अपनी विल करेगी।

ममता: अगर पत्नी के पास ज़ेवर है और वो गुज़र गई तो ?

दिनेश नायक: पति और बच्चों को बराबर मिलेंगे। उनका मूल्यांकन करके बांटा जायेगा।

ममता: मान लो दो बच्चो के अलावा कोई तीसरा प्रिय रिश्तेदार हो उसे भी हिस्सा दिया गया हो तब?

दिनेश नायक: देखिये ये बात उस तीसरे आदमी को तो पता नहीं हो तो घर के बच्चे ही आपस में बांट लेते है और वसीयत छुपा ली जाती है या कह देते है वसीयत लिखी ही नहीं।

ममता: यदि किसी के पति की डेथ हो गई और पत्नी घर छोड़ के चली गई तो क्या खानदानी प्रापर्टी में पत्नी को हिस्सा मिलेगा?

दिनेश नायक: अगर तलाक नहीं हुआ है तो खानदानी संपत्ति में पत्नी का हिस्सा होगा।

ममता: बच्चे अगर दादा-दादी के पास हो और बहू अलग हो गई तब?

दिनेश नायक: जो बच्चो का संरक्षक होगा उनके नाबालिग रहते उनके पास संपत्ति रहेगी पर अगर बच्चों की पढ़ाई लिखाई देखभाल के लिये संपत्ति बेचना चाहता है तो कोर्ट की अनुमति लेनी होगी चाहे वो माँ, दादी, बाबा क्यों ना हो।

ममता: यदि कोई विल ना लिख गया हो तो?

दिनेश नायकः खानदानी प्रापर्टी तो मांगी जा सकती है। जमीन हो तो आप तहसीलदार के पास जायेंगे। अचल संपत्ति के लिये सिविल कोर्ट में जायेंगे। और चल संपत्ति गाड़ियाँ फ्रिज, कीमती सामान को भी लिखना पड़ेगा।

आज जिंदगी के बहुत महत्वपूर्ण विषय पर बात हुई आप कुछ और जानना चाहे तो अवश्य पूछे तब तक के लिये पूछते रहे और क्या कह रही है जिंदगी।

डा. दुबे ,आचार्य मिश्र को महात्मा गांधी व डा. सरोज गुप्ता को हरिकृष्ण दत्त शिक्षा सम्मान

भोपाल। माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल जैव-विविधता के लिए समर्पित भाव से कार्यरत पर्यावरणविद डा. प्रवीण चन्द्र दुबे और भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्येता आचार्य प्रभुदयाल मिश्र को 'महात्मा गांधी सम्मान' से विभूषित करेगा। यह कार्यक्रम मंगलवार, 7 अक्टूबर को पूर्वाह्न 10.30 बजे सप्रे संग्रहालय के सभागार में आयोजित है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विजय मनोहर तिवारी, कुलगुरु, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय होंगे। अध्यक्षता डा. विकास दवे, निदेशक, मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी करेंगे। सप्रे संग्रहालय के संस्थापक विजयदत्त श्रीधर ने बताया कि शिक्षाविद और बुंदेली भाषा, साहित्य एवं संस्कृति मर्मज्ञ डा. सरोज गुप्ता, सागर को 'डा. हरिकृष्ण दत्त शिक्षा सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा।

'डा. लक्ष्मीनारायण गुप्त महाकोशल पत्रकारिता पुरस्कार' जबलपुर के वरिष्ठ पत्रकार श्री संजय साहू को प्रदान किया जाएगा। इंदौर में शोध संदर्भ सामग्री के संचयन, संरक्षण और प्रबंधन के सारस्वत अनुष्ठान में तीन दशक से समर्पित श्री कमलेश सेन, असरदार आवाज के धनी, श्रेष्ठ उद्घोषक और कुशल कार्यक्रम संचालक श्री संजय श्रीवास्तव तथा पौधरोपण को अपने जीवन का मिशन बनाने वाले श्री सुनील दुबे 'वृक्षमित्र' को 'कर्मवीर सम्मान' प्रदान किया जाएगा।

इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार श्री दिनेश शुक्ल को उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए 'रामेश्वर गुरु पुरस्कार' दिया जाएगा।

जानवरों की आवाज थीं.... जेन गुडॉल

कुछ कहते हैं कि हमें जानवरों का नाम देकर उन्हें मानवीय व्यक्तित्व नहीं देना चाहिए, लेकिन गुडॉल ने दिखाया कि जानवरों को अलग-अलग व्यवहार वाले इंसान के रूप में देखना न केवल जरूरी है, बल्कि इससे वन्य जीवों के साथ जुड़ाव और उनकी देखभाल में भी काफी मदद मिलती है। वन्यजीवों के लिए गुडॉल आवाज बन गईं। सोशल मीडिया पर चिंपाजी और जेन के गले मिलने वाले वीडियो खूब दिखाई देते हैं, लेकिन उनका इन जानवरों से कितना लगाव था यह उनके काम से दिखाई देता है। कहती हैं- 'अगर हम समझेंगे, तभी परवाह कर सकते हैं। अगर परवाह करेंगे, तभी मदद कर पाएंगे। अगर मदद करेंगे, तभी सभी बच पाएंगे।

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

एक अक्टूबर को खबर आई कि जेन गुडॉल नहीं रहीं। जेन गुडॉल ने दुनिया को बताया कि इंसान ही इकलौता जानवर नहीं है, जिसे चीजों को तोड़-मरोड़ कर टूल्स बनाने का फन हासिल हो, ऐसा तो चिंपाजी भी कर लेते हैं। उम्मीद कितनी जरूरी है यह समझाया और यह भी कि कुछ कर गुजरने के लिए सिर्फ सही दिशा में पहला कदम उठाना जरूरी है। जेन का नाम रहती दुनिया तक याद रखा जाएगा, जो बिना हो हल्ले के चुपचाप काम करती रहीं, लेकिन उनके काम करने से अनगिनत धमाके हुए और सही मायनों में इंसान और प्रकृति के रिश्ते को नया नजरिया मिला।

छब्बीस साल की जेन ने 1960 में तंजानिया में चिंपाजी को लकड़ी तोड़-मरोड़ कर चम्मच बनाते देखा और वहीं से वह मानवाधिकार और पशु कल्याण की पैरोकार बन गईं, जिसमें रिसर्च में जानवरों के इस्तेमाल पर रोक लगाना भी शामिल था। उन्होंने 1977 में वाशिंगटन डीसी में गैर-लाभकारी वन्यजीव संरक्षण संगठन जेन गुडॉल इंस्टीट्यूट बनाया। जानवरों और खास तौर से चिंपाजी व्यवहार की जानकार और दुनिया भर में आबोहवा हिफाजत के लिए गुडॉल जानी जाती थीं।

उन्होंने यह सब ऐसे समय में हासिल किया, जब विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं को दरकिनार या नजरअंदाज किया जाता था। गुडॉल उस दौर में मिसाल थीं, जब विज्ञान पर पुरुषों का ही दबदबा था, खासकर दूर-दराज के इलाकों में, लेकिन उन्होंने इस सोच को बदल दिया। उन्होंने लुई लीकी को मौका देने के लिए राजी कया। लीकी ने गुडॉल को पहले सचिव बनाया, फिर जेन को तंजानिया के गोम्बे स्ट्रीम राष्ट्रीय उद्यान जाने के लिए कहा। 1960 में वहां पहुंच गईं और उसके बाद इतिहास बन गया। माना जाता है कि गुडॉल ने शांत और मजबूत इरादों के साथ चिंपाजी का भरोसा जीता। ये गुण गुडॉल के लिए बहुत उपयोगी रहे। न केवल चिंपाजी के साथ, बल्कि समाज बदलाव की वकालत करने के उनके पूरे करियर में। गोम्बे में उन्होंने पहली बार दिखाया कि जानवर औजार बना सकते हैं और उनका इस्तेमाल कर सकते हैं। उनका अपना व्यक्तित्व होता है, भावनाएं दिखने में काबिल हैं और उनमें कहीं ज्यादा समझ होती है।

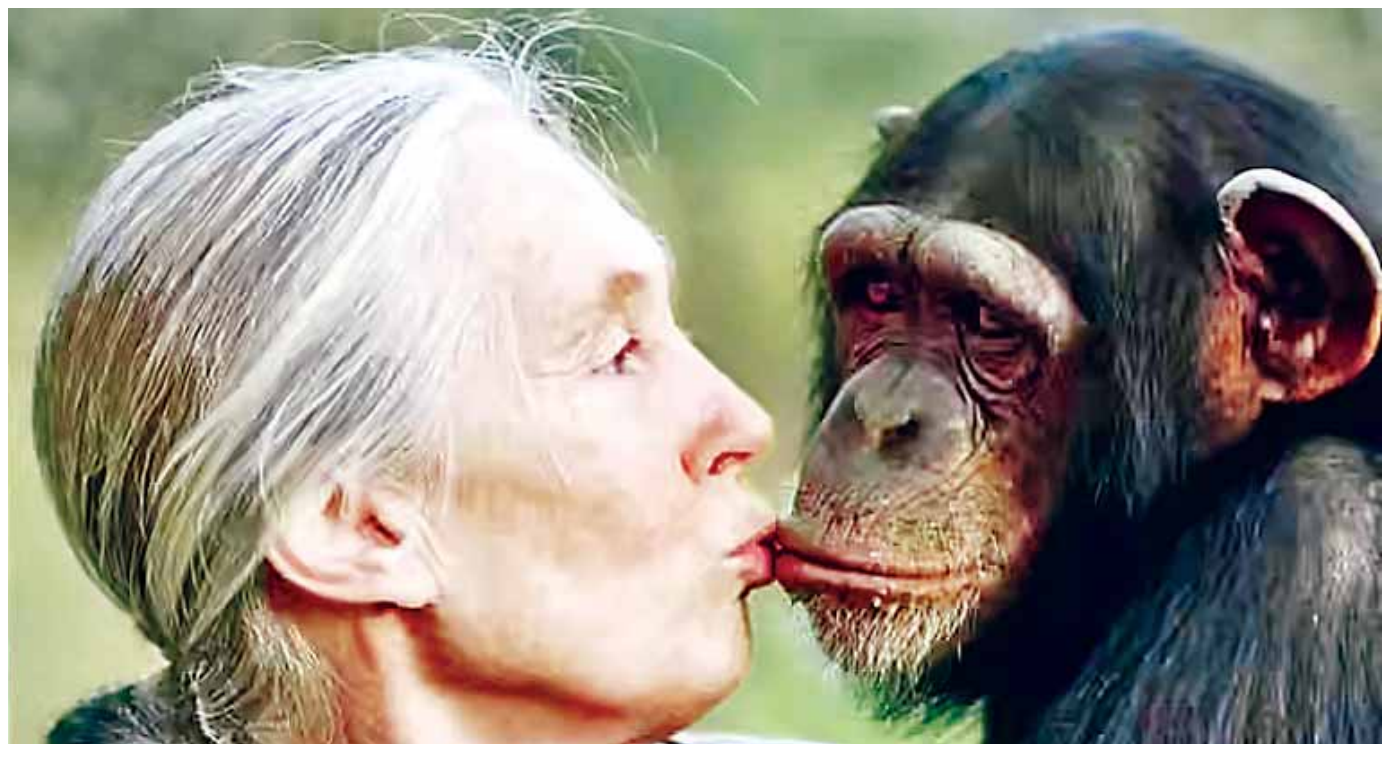

कुछ कहते हैं कि हमें जानवरों का नाम देकर उन्हें मानवीय व्यक्तित्व नहीं देना चाहिए, लेकिन गुडॉल ने दिखाया कि जानवरों को अलग-अलग व्यवहार वाले इंसान के रूप में देखना न केवल जरूरी है, बल्कि इससे वन्य जीवों के साथ जुड़ाव और उनकी देखभाल में भी काफी मदद मिलती है। वन्यजीवों के लिए गुडॉल आवाज बन गईं। सोशल मीडिया पर चिंपाजी और जेन के गले मिलने वाले वीडियो खूब दिखाई देते हैं, लेकिन उनका इन जानवरों से कितना लगाव था यह उनके काम से दिखाई देता है। कहती हैं- 'अगर हम समझेंगे, तभी परवाह कर सकते हैं। अगर परवाह करेंगे, तभी मदद कर पाएंगे। अगर मदद करेंगे, तभी सभी बच पाएंगे।

हम उन सभी प्रजातियों को समझने, देखभाल करने और उन्हें बचाने में मदद करने का संकल्प लेकर जेन की इस विरासत का सम्मान करें, जिनके साथ हम इस दुनिया को साझा करते हैं।